RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

वर्ष-11 अंक:111 ता. 22 अक्टूबर 2022, शनिवार, कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

दिवाली से पहले पश्चिम बंगाल में असर दिखाएगा तूफान 'सितरंग'!

नई दिल्ली। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) ने चक्रवाती तूफान सितरंग को लेकर अलर्ट जारी किया है। हालांकि, आईएमडी के अलर्ट में ओडिशा के लिए राहत भरी खबर है। अनुमान में कहा गया कि पश्चिम-मध्य बंगाल की खाड़ी के ऊपर एक चक्रवाती तूफान के और तेज होने की आशंका है। रविवार देर रात तूफान तट पर पहुंच सकता है। आईएमडी ने गुरुवार को कहा कि सितरंग चक्रवात ओडिशा तट को पार करेगा और पश्चिम बंगाल-बांग्लादेश तटों की ओर बढ़ेगा। आईएमडी के भुवनेश्वर केंद्र ने कहा कि गुरुवार सुबह उत्तरी अंडमान सागर के ऊपर और दक्षिण अंडमान सागर व दक्षिण-पूर्व बंगाल की खाड़ी के आसपास के क्षेत्रों में एक कम दबाव का क्षेत्र बना था। 22 अक्टूबर के आसपास इस तूफान के पश्चिम-उत्तरपश्चिम की ओर बढ़ने की संभावना है। 23 अक्टूबर को इसके बंगाल की खाड़ी पर पहुंचने की आशंका है।

24 अक्टूबर को तेज होगा चक्रवात

आईएमडी ने कहा कि 24 अक्टूबर तक पश्चिम-मध्य और उससे सटे पूर्वी मध्य बंगाल की खाड़ी के ऊपर चक्रवाती तूफान और तेज हो सकता है। तूफान धीरे-धीरे उत्तर-उत्तरपूर्व की ओर बढ़ेगा। 25 अक्टूबर को तूफान के ओडिशा को छोड़कर पश्चिम बंगाल-बांग्लादेश तटों के पास पहुंचने की संभावना है। मौसम विभाग ने 23 अक्टूबर की सुबह तक के लिए कोई बड़ी चेतावनी जारी नहीं की है।

49 किमी तक रह सकती है हवा की स्पीड

मौसम विभाग उत्तरी अंडमान समुद्र के ऊपर बन रही मौसम प्रणाली पर नजर रख रहा है। विभाग का कहना है कि हवा की स्पीड 49 किमी तक रह सकती है। सितरंग थाईलैंड की ओर से सुझाया गया नाम है।

मौसम विभाग ने ओडिशा के कुछ इलाकों में भारी बारिश की संभावना जताई है।

दिवाली से पहले पीएम मोदी युवाओं को देंगे तोहफा, आज 75000 नियुक्तियों से शुरू होगा रोजगार मेला

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दिवाली से पहले देश के युवाओं को एक बड़ा तोहफा देने जा रहे हैं। पीएम कल यानी 22 अक्टूबर को सुबह 11 बजे वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए 10 लाख लोगों के भर्ती अभियान रोजगार मेले का शुभारंभ करेंगे। इस अवसर पर पीएम 75000 लोगों को कल नियुक्ति पत्र सौपेंगे। इन नवनियुक्त युवाओं को पीएम संबोधित भी करेंगे। बता दें कि इस भर्ती अभियान के तहत केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों आदि में यह नियुक्तियां हो रही है।

अलगे साल तक 10 लाख नौकरी देने का वादा

इस कार्यक्रम में कई मंत्री भी हिस्सा लेंगे। शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान उड़ीसा से, अनुराग ठाकुर चंडीगढ से, पीयूष गोयल महाराष्ट्र से और मनसुख मांडविया गुजरात से जुड़ेगे। इसके अलावा कई और मंत्री भी अलग-अलग शहरों से

जुड़ेंगे। सभी सांसद भी अपने संसदीय क्षेत्र से इस कार्यक्रम में जुड़ेगें। बता दें कि पीएम ने इस अभियान के तहत दिसंबर 2023 तक 10 लाख नौकरी देने का ऐलान किया था।

इन मंत्रालयों में होगी भर्ती

जानकारी के अनुसार पीएम मोदी कल जिन चयनित 75 हजार पुरुष एवं महिला उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र देंगे वह अलग-अलग मंत्रालय और विभागों में कार्यरत होंगे। इनमें रक्षा मंत्रालय, रेल मंत्रालय, श्रम व रोजगार मंत्रालय, डाक विभाग, गृह मंत्रालय, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआइएसएफ), केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआइ), कस्टम, बैंकिंग आदि में रोजगार शामिल होगा।

इस लेवल की होगी भर्ती

पीएम मोदी जिन चयनित कर्मियों को कल नियुक्ति पत्र देंगे वो केंद्र सरकार के 38 मंत्रालयों या विभागों में नियुक्त होंगे। यह कर्मचारी ग्रुप-ए, ग्रुप-बी (राजपत्रित), ग्रुप-बी (अराजपत्रित) और ग्रुप-सी में भर्ती होंगे। जिन पदों पर नियुक्तियां की जा रही हैं, उनमें केंद्रीय सशस्त्र बल कार्मिक, उप निरीक्षक, कान्स्टेबल, एलडीसी, स्टेनो, पीए, आयकर निरीक्षक, एमटीएस और अन्य शामिल हैं।

प्रधानमंत्री पहुंचे उत्तराखंड, राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने किया स्वागत

देहरादून। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवार सुबह जौलीग्रांट एयरपोर्ट पहुंचे। राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री का स्वागत किया। प्रधानमंत्री केदारनाथ और बदरीनाथ धाम जाएंगे। प्रधानमंत्री के आगमन के मद्देनजर केदारनाथ धाम को दस क्विंटल फूलों से सजाया गया है। देहरादून से लेकर दोनों धामों में सुरक्षा का कड़ा बंदोबस्त किया गया है। जौलीग्रांट एयरपोर्ट पर राज्यपाल लेफ्टिनेंट (रिटायर्ड) जनरल गुरमीत सिंह, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्रीअजय भट्ट आदि ने प्रधानमंत्री का स्वागत किया। यहां से प्रधानमंत्री हवाई मार्ग से केदारनाथ के लिए रवाना हुए। वे सुबह करीब 8:30 बजे केदारनाथ मंदिर में दर्शन और पूजा कर देश के खुशहाली और तरक्की के लिए प्रार्थना करेंगे। प्रधानमंत्री करीब 1000 करोड़ की सड़क चौड़ीकरण परियोजनाओं का शिलान्यास और 3400 करोड़ से अधिक की कनेक्टिविटी परियोजनाओं की आधारशिला भी रखेंगे। प्रधानमंत्री का हमेशा उत्तराखंड से विशेष लगाव रहा है। प्रधानमंत्री बनने के बाद उनकी यह छठवीं यात्रा केदारनाथ और दूसरी यात्रा बदरीनाथ धाम की है।

प्रधानमंत्री मोदी सुबह करीब 9 बजे केदारनाथ रोप-वे परियोजना की आधारशिला रखेंगे।करीब 9:25 बजे मंदाकिनी आस्थापथ और सरस्वती आस्थापथ के साथ विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा करेंगे। इसके पश्चात दोपहर करीब 12 बजे बदरीनाथ मंदिर में पूजा करेंगे।

आर्मी चीफ बोले- 8 सालों में 8 लाख करोड़ तक पहुंचेगा लोकल डिफेंस कॉन्ट्रैक्ट

नई दिल्ली। भारतीय सेना की ओर से देश में बने घातक हथियारों को बढ़ावा देने पर जोर दिया जा रहा है। सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने विश्वास जताया कि इंडियन इंडस्ट्री सशस्त्र बलों की तत्काल जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है। उन्होंने कहा कि अगले 8 साल में लोकल डिफेंस कॉन्ट्रैक्ट 8 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है, क्योंकि स्वदेशीकरण को लेकर अभियान जारी है। आर्मी चीफ ने कहा कि सेना को युद्ध के विभिन्न क्षेत्रों में नई तकनीक की जरूरत है। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित सैटेलाइट इमेजरी इंटरप्रेटेशन, ड्रोन एंड काउंटर सिस्टम, युद्ध सामग्री, क्वांटम कंप्यूटिंग और सैनिकों की गतिशीलता शामिल है। यह प्राइवेट सेक्टर के लिए एक बाजार तैयार करता है।

स्वदेशी कॉन्ट्रैक्ट्स में तीन गुना की बढ़ोत्तरी-मनोज पांडे ने कहा, बीते तीन-चार सालों में स्वदेशी कॉन्ट्रैक्ट्स में तीन गुना की बढ़ोत्तरी हुई है। आने वाले सात-आठ सालों में स्वादेशी मार्केट की वैल्यू 7-8 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच सकती है। यह ऐसी मार्केट होगी जिसमें डिफेंस इंडस्ट्री के लिए बहुत सारी संभावनाएं होंगी।

सेना प्रमुख ने कहा कि रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध से भी काफी कुछ सीखा जा सकता है। इस दौरान हमें स्वदेशी प्रोडक्शन की सख्त जरूरत देखी गई है, ताकि डिफेंस के लिए आयात पर निर्भर न रहना पड़े। उन्होंने कहा कि सैन्य बलों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए ही प्राइवेट सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाए गए हैं।

डिफेंस से जुड़े स्टार्टअप्स को दिया जा रहा बढ़ावा-जनरल मनोज पांडे ने कहा, हम स्टार्टअप्स और छोटी कंपनियों का साथ दे रहे हैं। ट्रायल और टेस्टिंग की प्रक्रिया आसान कर दी गई है। प्राइवेट इंडस्ट्री हमारी जरूरतों को समझ सके, इसके लिए भी कदम उठाए गए हैं। सेना की ओर से इमरजेंसी प्रोक्योरमेंट्स का चौथा चरण जारी है। इसमें स्वदेशी प्रोडक्ट्स पर अधिक फोकस किया जा रहा है।

पुलिस स्मृति दिवस

पीएम मोदी के विजन के चलते देश की आंतरिक सुरक्षा हुई मजबूत-अमित शाह

नई दिल्ली। देश की आंतरिक सुरक्षा में मोदी सरकार के आने के बाद बड़ा बदलाव आया है। अब युवा पत्थर फेंकने को मजबूर नहीं हैं, बल्कि देश सेवा से जुड़ रहे हैं। यह बात केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पुलिस स्मृति दिवस पर कही। शाह आज पुलिस स्मृति दिवस पर राष्ट्रीय पुलिस स्मारक का दौरा करने पहुंचे थे, जहां उन्होंने मोदी सरकार के बड़े कार्यों का जिक्र किया। शाह ने कहा कि पहले पत्थर फेंकने में शामिल युवा अब सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न विकास परियोजनाओं में शामिल हैं।

आंतरिक सुरक्षा में सकारात्मक बदलाव आया

अपने संबोधन में शाह ने पीएम मोदी की खासी तारीफ की। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के विजन के तहत देश की आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने के लिए कई उपाय किए गए हैं, जिसका अब असर दिख रहा है। उन्होंने कहा कि देश की आंतरिक सुरक्षा में सकारात्मक बदलाव आया है। इससे पहले पूर्वोत्तर, कश्मीर और वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में आए दिन बड़ी घटनाएं होती थीं।

हर दिशा में प्रगति करता हुआ दिखाई दे रहा देश

शाह ने कहा कि पहले सशस्त्र बलों को विशेष अधिकार दिए जाते थे, अब युवाओं को उनकी प्रगति के लिए विशेष अधिकार दिए जाते हैं। गृह मंत्री ने आगे कहा कि आज हमारा देश हर दिशा में प्रगति करता हुआ दिखाई दे रहा है। देशभर की पुलिस फोर्स और CAPF के 35,000 से ज्यादा जवानों ने देश की रक्षा करने के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है।

चांद पर होगी बड़ी खोज ! अगले साल जून में होगी 'चंद्रयान-3' की लॉन्चिंग

नई दिल्ली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने अगले साल जून में चंद्रयान-3 की लॉन्चिंग की योजना बनाई है जो भविष्य में चांद की सतह पर खोज के लिहाज से महत्वपूर्ण अभियान है. अंतरिक्ष एजेंसी ने अगले साल की शुरुआत में देश के पहले मानव अंतरिक्ष यान 'गगनयान' के लिए 'एबॉर्ट मिशन' की पहली परीक्षण उड़ान की तैयारी भी की है. इसरो प्रमुख एस. सोमनाथ ने यहां एक कार्यक्रम से इतर मीडिया से बातचीत में कहा, 'चंद्रयान-3 (सी-3) मिशन को प्रक्षेपण यान मार्क-3 के जरिए अगले साल जून में प्रक्षेपित किया जाएगा.' उन्होंने कहा कि एबॉर्ट मिशन और मानवरहित परीक्षण उड़ान की सफलता के बाद इसरो की योजना 2024 के अंत तक भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को कक्षा में भेजने की है. सितंबर 2019 में चंद्रयान-2 मिशन के दौरान लैंडर 'विक्रम' के चंद्रमा की सतह पर दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद वहां यान उतारने का भारत का पहला प्रयास विफल हो गया था. सोमनाथ ने कहा, 'सी-3 तैयार है. यह सी-2 की प्रतिकृति नहीं है. इस यान की अभियांत्रिकी बिल्कुल अलग है. हमने इसे काफी मजबूत बनाया है ताकि इसमें पिछली बार जैसी दिक्कतें सामने नहीं आएं.'

आयोजित होंगी 6 टेस्ट फ्लाइट-उन्होंने कहा, 'इसमें कई बदलाव किए गए हैं. किसी भी उपकरण के विफल होने की सूरत में अन्य उपकरण इसकी भरपाई करेंगे.' उन्होंने कहा कि यह रोवर यात्रा की ऊंचाई की गणना करने और खतरे से मुक्त स्थानों की पहचान करने के लिए बेहतर सॉफ्टवेयर से लैस है. 'गगनयान' के संबंध में सोमनाथ ने कहा कि इसरो असल में मनुष्यों को कक्षा में ले जाने से पहले छह परीक्षण उड़ानें आयोजित करेगा. उन्होंने कहा कि 'गगनयान' अभियान की तैयारी धीमी और स्थिर गति से चल रही है.

बचाव क्षमताओं का प्रदर्शन-गगनयान की पहली गैर-चालक दल वाली उड़ान दो 'एबॉर्ट मिशन' के बाद यह प्रदर्शित करने के लिए होगी कि अंतरिक्ष एजेंसी के पास किसी भी घटना की स्थिति में चालक दल को बचाने की क्षमता है.

मनसुख मंडाविया ने कहा- भारत जल्द बनेगा मेडिकल टूरिज्म का ग्लोबल हब

अहमदनगर। केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ मनसुख मंडाविया ने अहमदनगर में एक कार्यक्रम में कई स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का उद्घाटन किया। परियोजनाओं में अहमदनगर में तीन प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र शामिल हैं जिनका वर्चुअली उद्घाटन किया गया था। इनमें डा. विखे पाटिल कैंसर केंद्र और डा. विखे पाटिल परमाणु चिकित्सा केंद्र शामिल है।

स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे में हो रहा निवेश

इस दौरान मांडविया ने कहा कि, स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे में निवेश के जरिए भारत स्वस्थ और समृद्ध भविष्य की ओर बढ़ रहा है। कार्यक्रम में बोलते हुए, डा. मनसुख मंडाविया ने कहा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश प्रगति कर रहा है। सरकार ने स्वास्थ्य को विकास से जोड़ा है, क्योंकि केवल एक स्वस्थ नागरिक ही राष्ट्रीय विकास में योगदान दे सकता है। उन्होंने कहा कि, कल्याण और उपचार पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। हमें सबसे पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे लोग बीमार न पड़ें। यही

कारण है कि हमारी सरकार स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

मेडिकल कॉलेजों की संख्या में हो रही बढ़ोतरी

देश में स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे के विकास को लेकर मंत्री मंडाविया ने कहा कि सरकार न केवल अधिक चिकित्सा सुविधाओं का निर्माण कर रही है बल्कि मेडिकल कॉलेजों की संख्या और एमबीबीएस सीटों की संख्या भी बढ़ा रही है। उन्होंने कहा, जब तक युवा मेडिकल कॉलेजों से स्नातक होंगे, तब तक देश एक मेडिकल टूरिज्म हब में बदल चुका होगा। यहां दुनिया भर के मरीजों को इलाज मुहैया कराएगा। वहीं, देश की रिसर्च नीति पर बोलते हुए डा. मंडाविया ने कहा कि दुनिया भर में हर 10 वैज्ञानिकों और शोध विद्वानों में से लगभग 3 भारतीय हैं। सरकार की शोध नीति प्रतिभाशाली युवाओं को प्रोत्साहित करती है और उनका समर्थन करती है। भारत का लक्ष्य नवाचार और अनुसंधान में अग्रणी बनना है।

शिमला सीट के लिए भाजपा को मिल गया एक और 'चायवाला'

शिमला। हिमाचल विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधी टक्कर देखने को मिल रही है। वहीं, आम आदमी पार्टी इसे त्रिकोणीय मुकाबला बना पाएगी या नहीं ये आने वाले दिन तय करेंगे। फिलहाल इस बार शिमला विधानसभा सीट पर भाजपा ने मुकाबले को रोचक बना दिया है। आगामी हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में शिमला शहरी सीट के लिए भाजपा को एक चायवाला मिल गया है। चायवाला नाम इसलिए भी दिलचस्प है क्योंकि भाजपा में चायवाला की संज्ञा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी मिल चुकी है। विपक्षी नेता चायवाला कहकर ही पीएम मोदी का मजाक बनाते थे, जिसे भाजपा ने हथियार के रूप में इस्तेमाल किया और जनता ने भी इसमें साथ दिया।

संजय सूद शिमला में एक चाय की दुकान चलाते हैं। भाजपा ने मंत्री सुरेश भारद्वाज की जगह सूद को शिमला से लड़ाने का निश्चय किया है। इससे पहले सुरेश भारद्वाज चार बार शिमला शहरी सीट से चुनाव लड़ चुके हैं। चाय बेचने वाले ने टिकट मिलने के बाद संजय सूद ने कहा, मैं बहुत आभारी हूं कि भाजपा ने मुझे शिमला अर्बन जैसी हॉट सीट से चुनाव लड़ने के लिए अपना उम्मीदवार बनाया। मेरा विश्वास सातवें आसमान पर है क्योंकि यह मेरे जैसे छोटे कार्यकर्ता के लिए एक बड़ा सम्मान है।

शिमला के चायवाला कौन हैं

संजय सूद एक बहुत ही गरीब परिवार से हैं और 1991 से शिमला में चाय की दुकान चला रहे हैं। इससे पहले वह अखबार बेचते थे

जिससे उन्हें कॉलेज की फीस भरने में मदद मिलती थी। उस वक्त उन्हें आरएसएस की छात्र शाखा विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) में काम करने का भी मौका मिला। उन्होंने कहा, इससे पहले मैं बस स्टैंड पर अखबार बेचता था। गरीब परिवार से होने के बावजूद दिल में सेवा की भावना बनी रही। मैंने पांच साल तक छात्र परिषद में काम किया लेकिन वित्तीय दिक्कतों के कारण इसे रोकना पड़ा। बाद में, मैंने दो साल तक एक चिकित्सा प्रतिनिधि के रूप में काम किया, जिसके बाद मैंने 1991 में इस चाय की दुकान खोली। इससे मुझे अपने परिवार का पेट पालने और उनके खर्चे का भुगतान करने में मदद मिलती है।÷

राजनीतिक पृष्ठभूमि से नहीं आते सूद

संजय सूद ने बताया, मैं एक राजनीतिक पृष्ठभूमि से नहीं आता, लेकिन जनता की सेवा के लिए तत्पर हूं। यही कारण है कि मैं 1977 में जनता पार्टी के बलाक्रम कश्यप के लिए बूथ पर बैठा था, यह वह दौर था जब मैं स्कूल में था। 1980 में भाजपा के गठन के बाद से मैं लगातार पार्टी के लिए काम कर रहा हूं।

पीएम मोदी से तुलना करने पर क्या बोले सूद-जैसा कि अब चायवाला की संज्ञा के साथ संजय सदू और पीएम मोदी के बीच तुलना की जा रही है। सूद ने कहा कि उनकी तुलना पीएम से नहीं की जानी चाहिए। एक समाचार वेबसाइट से बात करते हुए कहा, कृपया मेरे साथ उनकी तुलना न करें, वह एक अतुलनीय व्यक्तित्व हैं, मैं उनके पैरों के नीचे की धूल के बराबर भी नहीं हूं।

सार समाचार

दिवाली का तोहफा: पंजाब कैबिनेट ने पुरानी पेंशन योजना को बहाल करने का किया फैसला

चंडीगढ़। छत्तीसगढ़ और राजस्थान के बाद पंजाब में भगवंत मान के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी (आप) सरकार ने घोषणा की कि उसने राज्य सरकार के कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) को वापस कर दिया है। यह योजना आज से लागू हो जाएगी। यह कर्मचारियों की लंबे समय से लंबित मांग थी क्योंकि 2004 में उन्हें ओपीएस से वंचित कर दिया गया था। यह एक ऐतिहासिक निर्णय है और राज्य के कर्मचारियों के लिए अब तक का सबसे अच्छा दिवाली उपहार है। मान ने कैबिनेट बैठक के बाद एक वीडियो संदेश में कैबिनेट ने ओपीएस को लागू करने की सैद्धांतिक मंजूरी दे दी थी। मान ने कहा कि आप के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने उनसे किए गए वादों को पूरा करने के लिए कहा था। सरकार के इस कदम को हिमाचल प्रदेश और गुजरात में विधानसभा चुनावों के प्रचार में राजनीतिक बढ़त हासिल करने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है, जहां आप अपने आधार का विस्तार करने के लिए बेताब प्रयास कर रही है। हिमाचल प्रदेश में, कांग्रेस ने भी सत्ता में आने पर ओपीएस में लौटने का वादा किया है। एक बार लागू होने के बाद, राज्य कर्मचारी संघ के नेताओं के अनुसार, इस कदम से पंजाब सरकार के लगभग 1.6 लाख कर्मचारियों को लाभ होने की संभावना है, जो 2004 के बाद सेवा में शामिल हुए थे।

ओडिशा में दिवाली पर आएगा चक्रवात, भारी बारिश होने की संभावना

भुवनेश्वर। बंगाल की खाड़ी में संभावित चक्रवात के कारण ओडिशा में अगले सप्ताह की शुरुआत में भारी बारिश होने का अनुमान है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। आईएमडी ने कहा कि मौसम प्रणाली के ओडिशा से निकलकर पश्चिम बंगाल तथा बांग्लादेश की ओर बढ़ने का अनुमान है। अधिकारियों ने बताया कि पश्चिम बंगाल सरकार ने कई जिलों के निचले इलाकों से लोगों को निकालने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। आईएमडी ने बताया कि मौसम प्रणाली के सोमवार को तीव्र चक्रवाती तूफान में बदलने से पहले शनिवार को अवदाब और रविवार को गहरे अवदाब का क्षेत्र बनने का अनुमान है। इसके उत्तर और उत्तर-पूर्व दिशा में पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश की ओर बढ़ने की संभावना है। चक्रवाती तूफान को 'सितरांग' नाम दिये जाने की उम्मीद है। यह नाम थाईलैंड ने सुझाया है। ओडिशा की राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री प्रमिला मलिक ने कहा कि सभी जिलों और तटीय क्षेत्र के अधिकारियों को किसी भी स्थिति से निपटने के निर्देश जारी कर दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि दमकल विभाग, ओडिशा राज्य आपदा मोचन बल (ओडीआरएएफ) और राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) के कर्मी किसी भी आपात स्थिति के लिए तैयार हैं। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि पश्चिम बंगाल सरकार ने पूर्व मेदिनीपुर, दक्षिण 24 परगना और सुंदरबन के निचले इलाकों से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। उन्होंने कहा कि संभावित चक्रवात से निपटने की तैयारियों के तहत सभी जिलाधिकारियों, पुलिस अधीक्षकों और आपातकालीन विभाग के कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं।'' उन्होंने कहा कि इन जिलों में तिरपाल, सूखे भोजन और दवाओं की भी पर्याप्त व्यवस्था की गई है।'' उन्होंने कहा कि कोलकाता पुलिस की आपदा प्रबंधन टीम को किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए कोलकाता नगर निगम के अधिकारियों के साथ मिलकर काम करने को कहा गया है।

दिवाली में कोहराम मचा सकता हैं कोरोना, सरकार की बढ़ी चिंता

नई दिल्ली। त्यौहारों से पहले फिर से कोरोना ने भारत की चिंता बढ़ा दी है। न केवल इसके नए वैरिएंट सामने आए हैं, बल्कि दैनिक मामलों की संख्या में भी इजाफा हुआ है। देश में पिछले 24 घंटे में कोरोना संक्रमण के 2,119 नए मामले सामने आने के बाद देश में संक्रमितों की संख्या बढ़कर 4,46,38,636 हो गई। जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या घटकर 25,037 रह गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से शुक्रवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, देश में संक्रमण से 10 और लोगों की मौत होने के बाद मरने वालों को आंकड़ा बढ़कर 5,28,953 पर पहुंच गया है। इन 10 मामलों में वे पांच लोग भी शामिल हैं, जिनके नाम संक्रमण से मौत के आंकड़ों का पुनर्मिलान करते हुए केरल ने वैश्विक महामारी से जान गंवाने वाले मरीजों की सूची में जोड़े हैं।
आंकड़ों के अनुसार, देश में कोरोना संक्रमण के सक्रिय केस यानी उपचाराधीन मरीजों की संख्या घटकर 25,037 रह गई है, जो कुल मामलों का 0.06 प्रतिशत है। पिछले 24 घंटे में उपचाराधीन मरीजों की संख्या में 473 मामलों की कमी दर्ज की गई है। वहीं, मरीजों के ठीक होने की राष्ट्रीय दर बढ़कर 98.76 प्रतिशत हो गई है। आंकड़ों के अनुसार, दैनिक संक्रमण दर 1.13 प्रतिशत, जबकि साप्ताहिक संक्रमण दर 0.97 प्रतिशत है। देश में अभी तक कुल 4,40,84,646 लोग संक्रमण मुक्त हो चुके हैं और कोविड-19 से मृत्यु दर 1.18 प्रतिशत है। वहीं राष्ट्रव्यापी टीकाकरण अभियान के तहत अभी तक कोविड-19 रोधी टीकों की 219.50 करोड़ खुराक दी जा चुकी हैं।

डेंगू मरीज की इलाज में लापरवाही से मौत, प्लेटलेट्स की जगह चढ़ाया मौसंबी का जूस

प्रयागराज। प्रयागराज जिले में डेंगू के एक मरीज को प्लेटलेट्स की जगह कथित रूप से मौसम्बी का जूस चढ़ाए जाने को लेकर यहां एक निजी अस्पताल को बृहस्पतिवार को सील कर दिया गया। मरीज की बाद में मौत हो गई। सोशल मीडिया पर इस घटना का वीडियो प्रसारित होने के बाद प्रदेश के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक के ट्वीट और उनके आदेश पर जिला प्रशासन हरकत में आया और उस अस्पताल को सील कर दिया गया, जहां मरीज को कथित तौर पर मौसम्बी का जूस चढ़ाया गया था।
अधिकारियों ने बताया कि मरीज प्रदीप पांडेय की हालत बिगड़ने के बाद उसे शहर के दूसरे अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी मौत हो गई। बहरहाल, इस घटना के संबंध में स्थानीय पुलिस थाने में कोई प्राथमिकी दर्ज नहीं की गई है। निजी अस्पताल के मालिक ने दावा किया कि प्लेटलेट्स किसी अन्य चिकित्सा केंद्र से लाए गए थे और तीन यूनिट प्लेटलेट्स चढ़ाए जाने के बाद मरीज को दिक्कत होने लगी थी। उपमुख्यमंत्री पाठक ने ट्वीट किया कि जनपद प्रयागराज में झलवा स्थित ग्लोबल अस्पताल द्वारा डेंगू के मरीज को प्लेटलेट्स की जगह मौसम्बी का जूस चढ़ा देने के वायरल वीडियो का संज्ञान लेते हुए मेरे द्वारा दिए आदेशों के क्रम में अस्पताल को तत्काल सील कर दिया गया है और प्लेट्लेट्स पैकेट को जांच के लिए भेजा गया है। उन्होंने कहा कि यदि अस्पताल प्रबंधन दोषी पाया गया तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।''

केरल: दुष्कर्म व हत्या के प्रयास के मामले में कांग्रेस विधायक को मिली अग्रिम जमानत

तिरुवंतपुरम। केरल की एक सत्र अदालत ने बलात्कार और हत्या के प्रयास के आरोप का सामना कर रहे कांग्रेस विधायक एल्धोस कुन्नापल्ली को बृहस्पतिवार को अग्रिम जमानत दे दी। विधायक कहां हैं, इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। मामले से जुड़े एक अभियोजक ने कहा कि अदालत ने विधायक को विभिन्न शर्तों के अधीन राहत दी। उन्होंने कहा कि विस्तृत आदेश मिलने के बाद ही शर्तों का पता चलेगा। इस बीच, केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी (केपीसीसी) के प्रमुख के. सुधाकरन ने कहा कि यह पार्टी के लिए शर्मसार करने वाली बात है, लेकिन वह कुन्नापल्ली के कृत्य या आचरण को सही नहीं ठहरा रही है। सुधाकरन ने राष्ट्रीय राजधानी में संवाददाताओं से कहा, ''हमारा प्रारंभिक आकलन यह है कि उनकी गलती है।'' सुधाकरन ने कहा कि कुन्नापल्ली के वकील के माध्यम से केपीसीसी कार्यालय को स्पष्टीकरण दिया गया था और शुक्रवार को उनके केरल पहुंचने के बाद इसकी जांच की जाएगी। केपीसीसी प्रमुख ने कहा, ''मैं इस पर गौर करूंगा और राज्य के अन्य पार्टी नेताओं के साथ चर्चा के बाद उचित निर्णय लिया जाएगा। हम उनके स्पष्टीकरण को देखेंगे।'' उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि पार्टी में कोई नहीं जानता कि कांग्रेस विधायक कहां हैं और सभी ने फोन पर कुन्नापल्ली से संपर्क की कोशिश की लेकिन यह व्यर्थ रहा। कांग्रेस सांसद के. मुरलीधरन ने इस मामले पर अलग राय रखी। उन्होंने कहा कि यह गलत है कि इस मामले में कार्रवाई नहीं की गई। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, ''पार्टी द्वारा विधायक को बचाने का कोई सवाल ही नहीं है। वह उनके खिलाफ कार्रवाई करेगी।'' साथ ही उन्होंने कहा कि बहुत सारे लोग ऐसे गलत कृत्यों में लिप्त रहे हैं और सभी दलों में ऐसे व्यक्ति हैं। उन्होंने कहा, ''यह सही नहीं है और हमें ऐसे लोगों को अलग-थलग करने की जरूरत है।'' पीड़िता की शिकायत के बाद बलात्कार और हत्या के प्रयास के अलावा कांग्रेस विधायक के खिलाफ मारपीट का भी आरोप लगाया गया है। शिकायत में कहा गया था कि विधायक ने उसका अपहरण किया और उसके साथ मारपीट की। विधायक के निजी सहायक और एक दोस्त सहित तीन आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था।

आतंकवाद मानवाधिकार का सबसे बड़ा उल्लंघनकर्ता, इंटरपोल की भूमिका बहुत अहम: अमित शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि आतंकवाद मानवाधिकार का सबसे बड़ा उल्लंघनकर्ता है। उन्होंने इंटरपोल और इसके सदस्यों से आह्वान किया कि वे सीमा से परे सहयोग के लिए हाथ मिलाएं ताकि सीमा पार आतंकवाद को हराया जा सके। इंटरपोल महासभा के 90वें सत्र को समापन दिवस पर संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि आपराधिक गिरोह गठजोड़ करके काम कर रहे हैं और वैश्विक पुलिस और खुफिया एजेंसियों को मिलकर काम करना चाहिए।
इंटरपोल महासभा में 164 देशों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए गृह मंत्री ने कहा, ''आतंकवाद मानवाधिकार का सबसे बड़ा उल्लंघनकर्ता है... अच्छे आतंकवाद और बुरे आतंकवाद, छोटे आतंकवाद और बड़े आतंकवाद की बात साथ-साथ नहीं हो सकती।'' उल्लेखनीय है कि इंटरपोल महासभा के सत्र का आयोजन नयी दिल्ली में भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के अवसर पर हो रहा है। शाह ने कहा कि अपराध की मौजूदा घटनाएं 'सीमा विहीन' हैं और इंटरपोल के सभी सदस्यों को इस चुनौती से निपटने के लिए साथ आना चाहिए। उन्होंने कहा कि इन मुद्दों से निपटने में वैश्विक पुलिस संगठन (इंटरपोल) की भूमिका 'बहुत अहम' है। गृहमंत्री ने कहा कि सीमा पार के आतंकवाद से निपटने के लिए सीमा से परे जाकर सहयोग बहुत अहम है। उन्होंने कहा कि अच्छे आतंकवाद और बुरे आतंकवाद, छोटे आतंकवाद और बड़े आतंकवाद की बात साथ साथ नहीं हो सकती।
ऑनलाइन माध्यम से लोगों को कट्टरपंथी बनाने के मुद्दे पर शाह ने कहा कि इसे राजनीतिक समस्या नहीं करार दिया जा सकता क्योंकि उस स्थिति में इसके खिलाफ लड़ाई आधे-अधूरे मन से होगी। शाह ने कहा कि (प्रधानमंत्री) नरेंद्र मोदी की सरकार पुलिस को सभी चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाने की कोशिश रही है। उन्होंने कहा कि भारत आतंकवाद और मादक पदार्थ तस्करी के मामलों का राष्ट्रीय डेटाबेस बना रहा है ताकि पुलिस इन सूचनाओं का प्रभावी तरीके से इस्तेमाल कर सके। शाह ने कहा कि नागरिकों की सुरक्षा पुलिस बल की पहली प्राथमिकता है।

धनशोधन मामले में शिवसेना सांसद संजय राउत की जमानत याचिका पर बहस पूरी

मुंबई। (एजेंसी)।

महाराष्ट्र की पात्रा चॉल पुनर्विकास परियोजना से जुड़े धनशोधन मामले में यहां की एक विशेष अदालत में शिवसेना सांसद (उद्धव गुट) संजय राउत की जमानत याचिका पर शुक्रवार को बहस पूरी हो गई। हालांकि, मामले की जांच कर रहे प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने लिखित दलील देने के लिए समय मांगा। विशेष न्यायाधीश एमजी देशपांडे ने मामले की सुनवाई दो नवंबर तक के लिए स्थगित कर दी और आरोपी की न्यायिक हिरासत उस दिन तक के लिए बढ़ा दी। राज्यसभा सदस्य राउत को जुलाई में उत्तरी मुंबई के गोरेगांव इलाके में पात्रा चॉल के पुनर्विकास से संबंधित वित्तीय अनियमितताओं में उनकी कथित भूमिका के लिए गिरफ्तार किया गया था।
पिछले महीने, शिवसेना नेता ने धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) से संबंधित विशेष अदालत से जमानत मांगी थी। जांच एजेंसी ने अदालत में दावा किया है कि अब तक संजय राउत को अपराध की कमाई से 3.27 करोड़ रुपये प्राप्त हुए हैं। सिंह ने ईडी के इस दावे को दोहराया कि शिवसेना नेता अपने सहायक एवं मामले के सह-आरोपी प्रवीण राउत के जरिये पर्दे के पीछे से काम कर रहे थे। हालांकि, राउत के वकील अशोक मुंदरगी ने दलील दी थी कि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि राज्यसभा सदस्य ने किसी भी समय पात्रा चॉल पुनर्विकास परियोजना की मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

यूपी में अपराधी और माफिया जेल में हैं, यहां फिर एनकाउंटर में ढेर हुए : योगी

लखनऊ (एजेंसी)।

यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अपराध और अपराधियों के खिलाफ सरकार की जीरो टॉलरेंस की नीति और पुलिस की सक्रियता का परिणाम है कि आज उत्तर प्रदेश में संगठित अपराध समाप्त हो चुका है। इसके बाद अपराधी या जेल में बंद हैं, अथवा गिरफ्तारी के दौरान मारे गए। प्रदेश में महिलाएं-बालिकाएं, कमजोर वर्ग और व्यापारी आज सुकून से हैं। हर पर्व-त्यौहार शांति और सौहार्द के बीच मन रहा है। पुलिस स्मृति दिवस के मौके पर पुलिस के वीर जवानों के साहस, शौर्य और बलिदान को नमन कर मुख्यमंत्री ने पुलिसकर्मियों को अब तक मिल रहे 200 रूपए साइकल भत्ता को बढाकर 500 रूपए मोटरसाइकल भत्ता देने की घोषणा की, साथ ही, पुलिस विभाग को भी ई-पेंशन पोर्टल की सेवाओं का उपहार दिया। दीवाली से ठीक पहले पुलिस के जवानों के बीच मौजूद मुख्यमंत्री ने पुलिसकर्मियों की सहूलियत को देखते हुए 5,00,000 रूपए से अधिक के चिकित्सा खर्च प्रतिपूर्ति की स्वीकृति पुलिस महानिदेशक स्तर से होने की घोषणा भी की। उन्होंने कहा कि अभी तक इसके लिए शासन स्तर पर कार्यवाही होती थी, जिससे अनावश्यक विलंब होता था, अब ऐसा नहीं होगा।
रिजर्व पुलिस लाइन, लखनऊ में आयोजित पुलिस स्मृति दिवस के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने 'श्रीमद्भगवतगीता में वर्णित हतो वा प्राप्स्यसि स्वगर्जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम के महान संदेश का उल्लेख कर कहा कि हमारे वीर जवानों ने गीता से महान प्रेरणा लेकर देश और प्रदेश की बाह्य व आंतरिक सुरक्षा सुढ़ रखने के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है। आज का दिन उनके इसी निष्ठा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का है।
सीएम ने कहा कि हमारे पुलिस बल ने विपरीत परिस्थितियों में भी अपना काम जारी रखा है। कोरोना के बीच अभूतपूर्व परिश्रम कर जहां नियमों का पालन किया, वहीं मानवता की मिसाल भी पेश की। कोरोना संक्रमित भी हुए लेकिन सेवापथ नहीं छोड़ा। इस दौरान 45 पुलिसकर्मियों का देहांत भी हुआ, जिनके परिजनों को नियमानुसार नौकरी व 22 करोड़ 50 लाख का भुगतान भी किया गया। यही नहीं, केंद्रीय अर्धसैनिक बलों, भारतीय सेना आदि में सेवारत उत्तर प्रदेश मूल के शहीद 581 जवानों के आश्रितों को 141.9 करोड़ की सहायता राशि दी गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि अपराधियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई कर अब तक 44 अरब 59 करोड़ की संपत्ति जब्त अथवा ध्वस्त की गई है। यहां अब बेटियों के लिए स्कूल अथवा गरीबों के लिए घर बन रहे हैं। सीएम ने कहा कि 30 मार्च 2017 से 13 अक्टूबर 2022 तक प्रदेश भर 166 दुर्दांत अपराधी मारे गए, जबकि 4,453 घायल हुए। 58,648 पर गैंगस्टर की कार्रवाई हुई और 807 पर एनएसए के तहत कार्रवाई की गई। 50 कुख्यात माफियाओं और उनके सदस्यों की लगभग 2268 करोड़ रूपए की संपत्ति जब्त अथवा ध्वस्त की गई। इसमें 1 माफिया व उसके 8 साथी मुठभेड़ में मारे भी गए। 39 को आजीवन कारावास की सजा हुई है, तब प्रभावी अभियोजन करते हुए 2 को फांसी की सजा दिलाई गई। इसी अवधि में हमारे 13 जवान शहीद भी हुए।

आने वाले दिन साबित हो सकते हैं खतरनाक! दिल्ली में प्रदूषण के स्तर में दिख सकती है भारी वृद्धि

नयी दिल्ली। सर्दियों के आते ही दिल्ली वालों का दम घुटने लगता हैं। पंजाब हरियाण में जलाई गयी पराली दिल्ली में प्रदूषणों के कारणों में से एक मुख्य कारण बनती हैं। सरकार ने दिल्ली में प्रदूषण को कंट्रोल करने के लिए कई तरह के प्रतिबंद लगाएं हैं। दिवाली पर अगर किसी को पटाखें जलाते पाया गया तो उसपर एक्शन लिया जाएगा। वहीं कोयला प्रयोग करके चलाई जा रही फेक्टरी पर भी कुछ समय के लिए प्रतिबंध लगाया गया हैं। सर्दियां आहट और त्योहारी सीजन के साथ ही दिल्ली में हवा की गुणवत्ता बिगड़नी शुरू हो गई है। राष्ट्रीय राजधानी में पिछले कुछ दिनों से खराब वायु गुणवत्ता देखी जा रही है और इसके और भी खराब होने की आशंका है। विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र (सीएसई) ने कहा कि इस साल दिवाली ऐसे वक्त में मनायी जा रही है जब पहले की अपेक्षा ज्यादा ठंड नहीं है लेकिन दिल्ली के पड़ोसी राज्यों में पराली जलाने से वायु प्रदूषण की समस्या बढ़ सकती है। दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में वायु गुणवत्ता प्रतिकूल मौसम विज्ञान संबंधी कारकों जैसे कम तापमान और हवा की गति के कारण अक्टूबर में बिगड़नी शुरू हुई थी जिससे प्रदूषकों का छितराव नहीं हुआ। पटाखों से होने वाला उत्सर्जन तथा पड़ोसी राज्यों में पराली जलाने से वायु गुणवत्ता और बदतर होगी। सीएसई ने कहा कि इस साल दिवाली पहले ही आ रही है, ''जिसका मतलब है कि गर्म मौसम और हवा की स्थितियां प्रदूषण को कम करने में मदद करेगी जो दिवाली की रात के समारोहों का हिस्सा बन गया है। पिछले दो साल के मुकाबले इस बार पराली जलाने से निकलने वाले धुएं ने क्षेत्र में अभी तक वायु गुणवत्ता पर असर नहीं डाला है और अक्टूबर की शुरुआत में बारिश ने भी हवा को अभी तक अपेक्षाकृत साफ रखा है।

वरुण गांधी का योगी सरकार पर हमला, शायद हवाई निरीक्षण से जमीनी मुद्दे नहीं दिखते

लखनऊ (एजेंसी)।

भारतीय जनता पार्टी के पीलीभीत से सांसद वरुण गांधी आए दिन अपनी ही योगी सरकार पर हमलावार दिखाते हैं। फिर उन्होंने यूपी पेट की परीक्षा को लेकर बीजेपी सरकार पर हमला किया है। वरुण गांधी ने अपने संबोधन के दौरान उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की ओर से प्रारंभिक पात्रता परीक्षा का आयोजन को लेकर कहा कि छात्र साल भर जी लगाकर पढ़ाई करते हैं, तैयारी करते हैं कि इस बार एग्जाम में बेहतरीन कर के आएंगे, लेकिन बाढ़ के चलते देश में 35 लाख में से 16 लाख छात्र परीक्षा देने से वंचित रह गए।
वरुण ने इसका जिम्मेदार सरकार को ठहराया है। उन्होंने सरकार पर हमला बोलकर कहा कि क्या आपको पता है कि पिछले 5 सालों में जो रोजगार दिया गया उसमें 80 फीसदी रोजगार संविदा पर दिया गया है। इस देश में कोई भी इंसान संविदा पर काम नहीं करना चाहता है। बता दें कि ये कोई पहला मौका नहीं है, जब वरुण गांधी अपनी ही सरकार पर हमलावर हो गए हों। वरुण गांधी बेरोजगारी के मुद्दे पर युवाओं की आवाज बनकर अपनी ही सरकार से सवाल किया करते हैं।
15 अक्टूबर को यूपी में परीक्षा केंद्र पर पहुंचने के लिए जद्दोजहद करते छात्रों की तस्वीरों को सोशल मीडिया पर साझा कर वरुण गांधी ने योगी सरकार पर निशाना साधा था। उन्होंने इन तस्वीरों के कैप्शन में लिखा था, यूपी बाढ़ की चपेट में है और 37 लाख से अधिक छात्र पेट की परीक्षा देने निकले हैं। प्रश्न पत्र हल करने से बड़ी चुनौती सेंटर तक पहुंचना है। छात्रों की निरंतर मांग के बाद ही न परीक्षा टाली गई और न यातायात के पुख्ता इंतजाम किए गए। शायद हवाई निरीक्षण से जमीनी मुद्दे नहीं दिखते।'

जिलाधिकारी प्रयागराज की अध्यक्षता में धनतेरस, दीपावली, भैजा दूज एवं छठ पूजा को सकुशल ढंग से सम्पन्न कराये जाने के सम्बंध में बैठक सम्पन्न

लक्ष्मीकांत पाण्डेय संवाददाता सूरत भूमि, प्रयागराज।

जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में शुक्रवार को संगम सभागार में धनतेरस, दीपावली, भैजा दूज, एवं छठ पर्व को सकुशल ढंग से सम्पन्न कराये जाने की तैयारियों के सम्बंध में बैठक आयोजित की गयी बैठक में जिलाधिकारी ने धनतेरस व दीपावली के पर्व के दृष्टिगत कहीं पर भी जाम की स्थिति न उत्पन्न हो, इसके लिए यातायात विभाग को यातायात व्यवस्था को पहले से ही चुस्त-दूरूस्त बनाये रखने के निर्देश दिए है उन्होंने विद्युत विभाग को त्योहारों के मद्देजनर विद्युत आपूर्ति की सुनिश्चितता बनाये रखने के निर्देश दिए है कहा कि कहीं पर भी शार्टसर्किट न होने पाये, इसकी मुकम्मल व्यवस्था सुनिश्चित रहे उन्होंने नगर निगम को साफ-सफाई की निरंतर व्यव-स्था बनाये रखने के निर्देश दिए है कहा है कि फागिंग, एण्टी लार्वा, नाली-नालों की सफाई नियमित रूप से करायी जाती रहे, कहीं पर भी जल-जमाव की स्थिति न होने पाये उन्होंने सभी उपजिलाधिकारियों एवं पुलिस क्षेत्राधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में भ्रमणशील रहकर निरंतर निगरानी करते रहने के निर्देश दिए है तथा त्योहारों को सकुशल ढंग से सम्पन्न कराये जाने हेतु आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित करने के लिए कहा है जिलाधिकारी ने सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों सहित अस्पतालों में सभी आवश्यक व्यवस्था बनाये रखने के लिए कहा है उन्होंने अस्पतालों में इमरजेंसी बर्न यूनिट को सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित बनाये रखने के लिए कहा है जिलाधिकारी ने सभी उपजिलाधिकारियों एवं पुलिस क्षेत्राधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा है कि निर्धारित किए गए स्थलों पर ही पटाखों की बिक्री सुनिश्चित की जाये तथा इसका निरंतर अनुश्रवण भी करते रहे उन्होंने फायर सेफ्टी सहित अन्य मानकों का पूर्ण रूप से पालन सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने खाद्यय सुरक्षा विभाग को निरंतर मिलावटी खाद्यय पदार्थों के विरूद्ध छापेमारी करते रहने के निर्देश दिए है और मिलावट करने वालों के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई किए जाने के लिए कहा है
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि त्यौहार के मद्देनजर सर्राफा की दुकानों पर विशेष चैकसी बरती जाये उन्होंने दुकानों पर लगाये गये सीसीटीवी कैमरों की क्रियाशीलता को अनिवार्य रूप से चेक करने के लिए कहा है वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने अग्निशमन विभाग के अधिकारियों को पटाखों की दुकान लगाने वाले दुकानदारों को फायर सेफ्टी के सम्बंध में जानकारी दिए जाने के लिए कहा है। उन्होंने जुआं, सट्टा खेलने वालों पर विशेष सर्तकता एवं निगरानी रखे जाने के निर्देश दिए है वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने पुलिस अधिकारियों को निरंतर भ्रमणशील रहकर चॉक-चैबंद व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश दिए है।

दिल्ली में जासूसी के आरोप में चीनी महिला गिरफ्तार, बौद्ध भिक्षु की वेशभूषा में रह रही थी

नई दिल्ली (एजेंसी)।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में चीन के लिए जासूसी करने वाली एक चीनी महिला को गिरफ्तार किया गया है। जानकारी के मुताबिक, गिरफ्तार चीनी महिला के कई भाषाओं में महारत हासिल है और वह नेपाली भाषा भी बहुत अच्छे से बोल लेती है। गिरफ्तार चीनी महिला का नाम काय रुओ बताया गया है। पूछताछ में चीनी महिला ने खुलासा कर दिल्ली पुलिस को भी चौंका दिया कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता उसे जान से मारने की फिराक में थे, इसलिए वह लगातार उनसे बच रही है। दिल्ली पुलिस लगातार महिला से पूछताछ कर रही है।
जानकारी के अनुसार मजनूं का टीला इलाके से दिल्ली पुलिस ने एक चीनी महिला नागरिक को गिरफ्तार किया है। दिल्ली पुलिस को शक है कि महिला भारत में जासूसी के लिए आई थी। दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल की तरफ से यह कार्रवाई की गई। मिली जानकारी के मुताबिक, दिल्ली पुलिस की गिरफ्त में आई चीनी महिला नेपाल की नागरिक बनकर बौद्ध भिक्षु की वेशभूषा में राजधानी में रह रही थी। महिला का नाम काय रुओ है। संदिग्ध हाव भाव के चलते दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल को काफी दिनों से शक था। गिरफ्तार चीनी महिला काय रुओ के पास नागरिकता के जो दस्तावेज मिले हैं उनमें उसने अपना नाम डोल्मा लामा लिखवाया हुआ था और उसका पता काठमांडू का लिखा हुआ है। उसके पासपोर्ट में भी नेपाल का पता लिखा हुआ है। शक होने पर एफआरआरओ से जांच कराई गई तो पता चला कि महिला काय रुओ चीनी नागरिक है और डोल्मा लामा नाम नकली है। वहीं, दिल्ली पुलिस अब इस महिला की यात्रा और रहने के ठिकानों की जानकारी भी जुटाने में जुट गई है। जानकारी के मुताबिक, चीनी नागरिक काय रुओ वर्ष 2019 में चाइनीज़ पासपोर्ट पर भारत आई थी। महिला ने पूछताछ में बताया कि उसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता मारने की फिराक में थे। महिला अंग्रेजी, चीनी और नेपाली भाषा जानती है। फिलहाल विभिन्न एजेंसियों महिला से पूछताछ कर रही है। वहीं, पिछले महीने पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के दस नेताओं को राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने राज्य के कई हिस्सों में असम पुलिस के साथ संयुक्त छापेमारी में गिरफ्तार किया था। गिरफ्तार लोगों की पहचान अमीनुल हक, अब्दुल रज्जाक, रोबिउल हुसैन, नजरूल इस्लाम भुइयां, रफीकुल इस्लाम, अबू समा अहमद, फरहाद अली, खलीलुर रहमान, मुफ्ती रहमतुल्ला और बजलुल करीम के रूप में हुई थी।

पाकिस्तान के चुनाव आयोग के ऑफिस के बाहर चली गोलियां, पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पर शक

इस्लामाबाद । पाकिस्तान के चुनाव आयोग ने जैसे ही पूर्व प्रधान मंत्री इमरान खान की संसद सदस्यता को खत्म किया उसके तुरंत बाद पाकिस्तान चुनाव आयोग के ऑफिर के बाहर फॉयरिंग की खबरें आ रही हैं। इमरान खान पर चुनाव आयोग को गलत जानकारी देने का आरोप हैं और इसके के मद्देनजर ईसी ने इमरान के खिलाफ ये कड़ा एक्शन लिया हैं। आपको बता दें कि जब इमरान खान की सत्ता को पलटकर शहबाज शरीफ पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने थे तब इमरान खान की पार्टी ने पूरे इस्लामाबाद में जमकर प्रदर्शन भी किए थे। ऐसे में यह भी धमकी दी गयी थी कि इस्लामाबाद में हिंसात्मक दंगे किए जाएंगे। पाकिस्तान के चुनाव आयोग ने शुक्रवार को पूर्व प्रधान मंत्री इमरान खान को अन्य देशों के प्रमुखों और विदेशी गणमान्य व्यक्तियों से प्राप्त राज्य उपहारों को अवैध रूप से बेचने के आरोप में सार्वजनिक पद पर रहने से अयोग्य घोषित कर दिया। इस बात की जानकारी पाकिस्तान की स्थानीय मीडिया द्वारा दी गयी है। खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी ने शुक्रवार के फैसले को तुरंत खारिज कर दिया। इसने कहा कि वह इस फैसले को चुनौती देने के लिए इस्लामाबाद उच्च न्यायालय में अपील दायर करेगी और समर्थकों से सड़कों पर उतरने का आह्वान करेगी।

पाक में हिंदू युवती का अपहरण कर जबरन धर्मांतरण कर कराई शादी

इस्लामाबाद । पाकिस्तान में हिंदू अल्पसंख्यक समुदाय के साथ शोषण और अत्याचार लगातार बढ़ते जा रहे हैं। ताजा मामला एक हिंदू लड़की के साथ ज्यादती का है। दिन दहाड़े उस हिंदू लड़की का अपहरण कर लिया जाता है, उसका इस्लाम में जबरन धर्मांतरण कराया जाता है और किडनैपर्स में से ही किसी एक के साथ उसकी शादी करा दी जाती है। जब यह मामला कोर्ट पहुंचता है तो कोर्ट भी उस लड़की को किडैनपर के पास ही जाने को कहता है। इसके बाद लड़की फूट-फूटकर रोने लगती है, तब जाकर कोर्ट का थोड़ा दिल पसीजता है और उस लड़की को सेफ हाउसे में जाने का आदेश देता है।

दरअसल, पाकिस्तान के हैदराबाद शहर में दो महीने पहले जिस चंदा नामक (काल्पनिक नाम) हिंदू लड़की का कथित रूप से दिनदहाड़े अपहरण कर जबरन इस्लाम में धर्मांतरण कराया गया था और एक मुस्लिम व्यक्ति से जिसकी शादी कराई गयी थी, उसे गुरुवार को पाकिस्तान की एक अदालत ने एक सुरक्षित घर यानी सेफ हाउस में भेज दिया। अदालत ने शुरू में लड़की को उसके माता-पिता के साथ जाने की अनुमति नहीं दी थी और उसके पति के वकील द्वारा पेश किए गए विवाह प्रमाण पत्र को स्वीकार कर लिया था, लेकिन अदालत के फैसले के बाद लड़की के रोने और अपनी मां से लिपटे होने के वीडियो सोशल मीडिया पर आने के बाद न्यायाधीश ने आदेश दिया कि उसे सुरक्षित घर में भेज दिया जाए और वह अपने माता-पिता से मिल सकती है। अदालत ने आदेश दिया कि उसकी चिकित्सा जांच भी कराई जानी चाहिए। दरअसल, अपनी बड़ी बहन के साथ एक कारखाने में काम करने वाली लड़की 12 अगस्त को अपने घर लौट रही थी तभी चार लोगों ने हैदराबाद के फतेह चौक से उसका कथित रूप से अपहरण कर लिया था। लड़की के माता-पिता और उनके वकील के अनुसार लड़की का जबरन इस्लाम में धर्मांतरण किया गया और एक अपहर्ता से उसकी शादी करा दी गई।

युवाओं में अवसाद या आक्रामकता का कारण बन सकती है गेमिंग की लत

सिडनी । एक जांचकर्ता ने गेमिंग की आदत को मूड डिसऑर्डर की वजह बताते हुए इसे क्षेत्रीय स्कूल के लड़के ओलिवर क्रोनिन की 2019 में हुई मृत्यु के लिए जिम्मेदार ठहराया है। जांचकर्ता पारेसा स्पैनोस की जांच के निष्कर्ष बुधवार को जारी किए गए। स्पैनोस ने रिपोर्ट में लिखा है कि अपनी मृत्यु से पहले के 12 महीनों में, ओलिवर वीडियो गेमिंग के प्रति जुनूनी हो गया था। वह कई बार गुस्सैल और आक्रामक हो जाता था। उनके माता-पिता ने इस व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए गेमिंग उपकरणों तक उसकी पहुंच को सीमित करने की कोशिश की, तो उसका व्यवहार और बिगड़ गया और वह अपने माता-पिता से गाली गलौज और हाथापाई पर उतर आया। मृत्यु से कुछ हफ्ते पहले ओलिवर ने अन्य छात्रों के साथ भी मारपीट की, जिसकी वजह से उसे दो बार छोटी अवधि के लिए स्कूल से निलंबित कर किया गया। ओलिवर को विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा परिभाषित 'गेमिंग डिसऑर्डर' था, हालांकि उनके जीवन के दौरान इस तरह का निदान नहीं किया गया था। गेमिंग डिसऑर्डर का डब्ल्यूएचओ का वर्गीकरण गेमिंग के प्रति व्यक्ति के रवैये पर आधारित है, गेमिंग पर खर्च किए जाने वाले समय पर नहीं। गेमिंग एक विकार बन जाता है जब यह किसी व्यक्ति के स्वस्थ दैनिक कामकाज में हस्तक्षेप करना शुरू कर देता है। हम जानते हैं कि दुनिया भर में दो अरब से अधिक लोग गेम खेलते हैं, लेकिन 1 फीसदी से भी कम को गेमिंग डिसऑर्डर से ग्रस्त माना जाता है। गेमिंग के संभावित नुकसान के बारे में बहस अक्सर इस बात को लेकर की जाती है कि क्या गेमिंग में हिंसा वास्तविक जीवन में हिंसा का कारण बन सकती है। इसके लिए, वैसे कोई सबूत नहीं है। कुछ सहसंबंध है, लेकिन इन निष्कर्षों का मूल्यांकन बहुत सावधानी से किया जाना चाहिए।

अमेरिका- जगमगाया टाइम्स स्क्वायर, दीपावली जश्न की भव्य शुरुआत

-भारतीय-अमेरिकी व्हाइट हाउस में आमंत्रित

न्यूयार्क । भारतीयों का सबसे बड़ा त्योहार दीपावली की धूम अमेरिका में यहां ऐतिहासिक 'टाइम्स स्क्वायर' रोशनी से जगमगा रहा है। यहां दीपावली उत्सव मनाने की शुरुआत हो गई है। अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप शुक्रवार को अपने-अपने आवास पर प्रकाशोत्सव मना रहे हैं। देश भर से प्रख्यात भारतीय-अमेरिकी गुरुवार रात से अमेरिकी राजधानी पहुंचने शुरू हो गए हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि बाइडेन प्रशासन और संसद सदस्यएक सप्ताह तक दीपावली मनाने वाले हैं। हैरिस और उनके पति ने शुक्रवार को प्रख्यात भारतीय-अमेरिकियों, राजनयिकों और प्रशासन के सदस्यों को दीपावली समारोह के लिए उपराष्ट्रपति आवास पर आमंत्रित किया है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और उनकी पत्नी डॉ. जिल बाइडेन ने दीपावली समारोह मनाने के लिए सोमवार को व्हाइट हाउस में भारतीय-अमेरिकियों को आमंत्रित किया है। विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन 26 अक्टूबर को विदेश मंत्रालय में राजनयिक समुदाय के साथ एक और दीपावली समारोह का आयोजन कर रहे हैं। अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में भी दीपावली मनाई जा रही है, जिसमें हमेशा की तरह जाने-माने सांसद शामिल हो रहे हैं। शुक्रवार को, 'रिपब्लिकन हिंदू कॉयलिशन' के लगभग 200 भारतीय-अमेरिकी सदस्य फ्लोरिडा में 'मार-ए-लागो' में ट्रंप के आवास पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल होंगे। रात के समय होने वाले इस कार्यक्रम में बॉलीवुड गीतों पर नृत्य किया जाएगा और मेहमानों को भारतीय व्यंजन परोसे जाएंगे। हैरिस और ट्रंप दोनों अपने-अपने आवास पर भारतीय समुदाय को संबोधित कर सकते हैं। बाइडन और ब्लिंकन के भी ऐसा करने की उम्मीद है। महत्वपूर्ण मध्यावधि चुनाव से ठीक दो हफ्ते पहले पड़ रही दीपावली धूमधाम से मनाकर राजनेता प्रभावशाली भारतीय-अमेरिकियों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। इस साल दीपावली का जश्न 15 अक्टूबर को ऐतिहासिक 'टाइम्स स्क्वायर' पर एक कार्यक्रम के आयोजन से शुरू हुआ, जिसमें शहर के मेयर एरिक एडम्स, सीनेट के बहुमत के नेता सीनेटर चक शूमर और न्यूयॉर्क में भारत के महावाणिज्य दूत रणधीर जायसवाल ने भाग लिया था।

सऊदी अरब में शुरु हुआ मेगा सिटी परियोजना का निर्माण, पूरी तरह प्राकृतिक ऊर्जा से संचालित दुनिया का पहला शहर होगा नेओम

रियाद। सऊदी अरब के उत्तर-पश्चिमी तबुक प्रांत के नेओम में मेगा-सिटी परियोजना द लाइन का निर्माण शुरू हो गया है। सन 2017 में पहली बार घोषित की गई परियोजना नेओम में उड़ने वाली टैक्सियों, रोबोट नौकरानियों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के फीचर से सजी इस मेगा-सिटी परियोजना पर आर्किटेक्ट और अर्थशास्त्रियों ने कई सवाल खड़े किए हैं। हालांकि, तमाम तरह की अटकलों के बाद भी इस परियोजना पर काम शुरू हो गया है। निर्माण स्थल के वीडियो और ड्रोन फुटेज में देखा जा सकता है कि रेगिस्तान के एक बड़े हिस्से पर काम चल रहा है। फुटेज में कई ट्रक और मशीनें रेगिस्तान के बीच काम करती दिख रही हैं। एक लाइन में 170 किलोमीटर लंबी गगनचुंबी इमारतों से बने इस शहर में भविष्य की सभी सुविधा दी जाएंगी। यह शहर केवल 200 मीटर चौड़ा होगा, लेकिन 170 किमी लंबा होने जा रहा है। सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान दो 500 मीटर ऊंची गगनचुंबी इमारतों का निर्माण कराना चाहते हैं, जो लंबाई में 170 किलोमीटर होगी। नेओम दुनिया का पहला शहर होगा जो पूर्ण रूप से प्राकृतिक ऊर्जा से संचालित होगा। शहर के सभी इलेक्ट्रिकल उपकरण सोलर, विंड और हाइड्रोजन एनर्जी से चलाए जाएंगे जो अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

हांगकांग तट पर रुसी कारोबारी ओलीगार्च का नोर्ड नाम का 465 फिट का सुपर याच पहुंचा।

पाकिस्तानी सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व पीएम इमरान के सरकार विरोध प्रदर्शन पर रोक से किया इंकार

इस्लामाबाद । पाकिस्तानी सुप्रीम कोर्ट ने शाहबाज सरकार की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान द्वारा नियोजित सरकार विरोधी प्रदर्शन के खिलाफ निर्देश जारी करने का आग्रह किया था। बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट ने शाहबाज सरकार को कानून एवं व्यवस्था पर नियंत्रण करने के लिए 'खुली छूट देकर आगाह किया कि अगर किसी भी पक्ष ने अदालत के आदेशों का उल्लंघन किया, तब वह हस्तक्षेप करेगा। संघीय सरकार ने खान की पार्टी के 'आजादी मार्च' के संबंध में अदालत के 25 मई के आदेश का उल्लंघन करने के लिए उनके खिलाफ अदालत की अवमानना की कार्यवाही शुरू करने के वास्ते गत सप्ताह सुप्रीम कोर्ट का रुख किया था। सरकार ने इसी याचिका में खान को नियोजित प्रदर्शन मार्च के जरिए कानून एवं व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने से रोकने का आदेश देने का अनुरोध किया। सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश उमर अता बंदियाल की अगुआई वाली पांच सदस्यीय पीठ ने याचिका पर सुनवाई की। न्यायालय ने नियोजित प्रदर्शन के संबंध में कोई आदेश देने से इनकार कर दिया है। हालांकि, यह प्रदर्शन अभी तक नहीं हुआ है।

यूक्रेन में लड़ने जाने वाले सैनिकों के प्रति दिखाया समर्थन, प्रशिक्षण स्थल पर पहुंचे

मॉस्को (एजेंसी)।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने लामबंदी में जुटाए गए सैनिकों के लिए एक प्रशिक्षण मैदान का निरीक्षण किया। जहां उन्हें एक स्नाइपर राइफल पर अपना हाथ आजमाते हुए देखा गया। पुतिन के स्नाइपर चलाने का उद्देश्य स्पष्ट रूप से यूक्रेन में लड़ने के लिए जाने वाले सैनिकों के लिए अपना व्यक्तिगत समर्थन दिखाना था। क्रेमलिन ने कहा कि पुतिन के साथ रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगू मास्को के दक्षिण-पूर्व में स्थित रियाजान की यात्रा पर थे, जिन्होंने उन्हें बताया कि सैनिकों को कैसे प्रशिक्षित किया जा रहा है।

पुतिन का दौरा युद्धस्तर को बढ़ाने और यूक्रेन के चार कब्जे वाले क्षेत्रों में मार्शल लॉ घोषित करने के एक दिन बाद सामने आया है। यूक्रेन में कई जगहों पर मिली हार के बाद रूस नए सिरे से अपनी रणनीति बना रहा है जिसमें पुतिन भी लामबंद किये गए नए सैनिकों की ट्रेनिंग को देखने पहुंचे थे। फिलहाल रूस आंशिक लामबंदी से तीन लाख से अधिक युवाओं को सेना में युद्ध के लिए भर्ती कर रहा है।

खेरसॉन के निवासियों को क्षेत्र को तत्काल खाली करने के संदेश दिए गए थे। रिपोर्ट के मुताबिक पिछले दो दिनों में 5,000 से अधिक लोगों को निकाला गया है। पिछले दिनों खेरसॉन को रूसी क्षेत्र बताने के बाद से ही यूक्रेन ने जवाबी कार्रवाई तेज करते हुए रूसी सेना को करीब 20-30 किमी (13-20 मील) पीछे खदेड़ दिया गया है। रूस को डर है कि अगर समय रहते बड़ी कार्रवाई नहीं की गई, तब यूक्रेन खेरसॉन को भी वापस कब्जा कर लेगा।

रूस के हमलों में यूक्रेन के 30 फीसदी बिजली घर तबाह हुए

कीव । रूस के राष्ट्रपति पुतिन की आपात बैठक के बाद से रूसी सेना ने यूक्रेन के पावर ग्रिड पर रणनीतिक मिसाइल और ड्रोन अटैक शुरू किए हैं। यूक्रेन ने रूस पर अपनी ऊर्जा ग्रिड को युद्ध के मैदान में बदलने का आरोप लगाया। यूक्रेन ने कहा पावर ग्रिड पर लगातार हो रहे हमलों के कारण देश की बिजली व्यवस्था चरमरा गई है, जिससे आने वाली ठंड को देखते हुए लोग पलायन को मजबूर हुए हैं। रूस पावर ग्रिड पर हमले रूस ईरान के आत्मघाती ड्रोन की मदद से कर रहा है। अमेरिका ने यूक्रेन के दावों के बाद कहा कि क्रीमिया में ईरान रूस के सैनिकों को ड्रोन हमले करने की ट्रेनिंग दे रहा है। अमेरिका ने कहा ईरानी सैन्य प्रशिक्षकों को ड्रोन पर रूसी बलों की सहायता के लिए क्रीमिया भेजा गया था।

पुतिन ने की थी परमाणु विस्फोट की कोशिश, लेकिन उसमें असफल हुए

विदेश मीडिया में किया जा रहा दावा

मॉस्को (एजेंसी)।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन कई बार परमाणु हमले की धमकी दे चुक हैं। आठ महीने पहले जब उन्होंने यूक्रेन पर हमला किया था, तब अपने परमाणु बलों को अलर्ट पर रहने का आदेश दे दिया था। अंदरूनी सूत्र के हवाले से मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया है, कि पुतिन ने एक परमाणु विस्फोट की कोशिश की थी लेकिन वह इसमें असफल रहे क्योंकि कुछ अंदरूनी लोगों ने उनकी योजना को विफल कर दिया। विदेशी मीडिया की खबर के अनुसार,बढ़ती चिंताओं के कारण ब्रिटिश रक्षा मंत्री ने अपने अमेरिका दौरे को टाल दिया है। विश्लेषकों को डर सता रहा है, कि पुतिन काला सागर में बम विस्फोट कर सकते हैं, इससे सुनामी और जहरीले गैस के बादल का खतरा पैदा होगा। दावा यह भी किया जा रहा है कि यूक्रेन में युद्ध के मैदान में इस्तेमाल से पहले आर्कटिक में एक परमाण परीक्षण की योजना बनाई जा रही है। धमकियों और अनुमान के बीच एक दावे ने सभी की चिंता को बढ़ा दिया है। कुछ रिपोर्ट्स का दावा है कि पुतिन ने इस महीने की शुरुआत में दो परमाणु परीक्षणों का आदेश दे दिया था, लेकिन 'कुछ कारणों' से वे हो न सके। अंदरूनी सूत्रों का दावा है कि प्रक्षेपण 'तकनीकी विफलता' या कुछ सैन्य प्रमुखों की अनिच्छा के चलते भी संभव न हो सके। जासूसों और राजनयिकों को ट्रेनिंग देने वाले मॉस्को के इंस्टीट्यूट में पूर्व प्रोफेसर, वरलेरी सोलोवी ने कहा कि यह दिखाता है कि पुतिन का अधिकार अब कमजोर हो रहा है। रिपोर्ट के अनुसार यूक्रेन युद्ध में सामरिक परमाणु हथियारों के इस्तेमाल पर पुतिन के फैसले को निस्संदेह विरोध का सामना करना पड़ेगा। मुझे नहीं पता प्रतिरोध कितना प्रभावी होगा, लेकिन पिछले दो हफ्तों में परमाणु परीक्षण होने वाले थे, एक बैरेंट्स सागर में पानी के नीचे और दूसरा आर्कान्जेस्क क्षेत्र में जमीन के नीचे। लेकिन दोनों बार टेस्ट नहीं हुए।' रूसी राष्ट्रपति और उनके करीबियों के विशेषज्ञ सोलोवी ने दावा किया कि पुतिन परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने के लिए सैद्धांतिक रूप से फैसला ले चुके हैं।

बाइडन ने चुनाव से पहले अमेरिका में गैस की कीमतों को कम करने के उपायों की घोषणा की

वॉशिंगटन (एजेंसी)।

अमेरिका में महत्वपूर्ण मध्यावधि चुनाव से पहले राष्ट्रपति जो बाइडन ने गैस की कीमतों को कम करने के लिए कई उपायों की घोषणा की है। गैस कीमतों में वृद्धि से मध्यम वर्ग प्रभावित हो रहा है। बाइडन ने एक प्रमुख नीतिगत संबोधन में दोहराया कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन अमेरिका में ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि के लिए जिम्मेदार हैं। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, ''जब गैस की कीमत बढ़ती है, तो अन्य खर्चे कम हो जाते हैं। इसलिए मैं गैस की कीमतों को कम करने के लिए अपने स्तर पर हर संभव प्रयास कर रहा हूं क्योंकि पुतिन के यूक्रेन पर आक्रमण के कारण इनकी कीमतों में तेजी आई और अंतरराष्ट्रीय तेल बाजारों में हलचल मच गई।'' बाइडन ने कहा कि ऊर्जा विभाग सामरिक पेट्रोलियम भंडार से एक बार और 1.5 करोड़ बैरल जारी करेगा, जो दिसंबर के महीने के लिए पहले घोषित तेल की आपूर्ति से अधिक होगा। उन्होंने कहा कि स्वतंत्र विश्लेषकों ने पुष्टि की है कि अब तक तेल भंडार में कमी ने तेल की कीमतों को नीचे लाने में एक बड़ी भूमिका निभाई है। इसलिए, हम उस राष्ट्रीय संपत्ति का जिम्मेदारी से उपयोग करना जारी रखेंगे। अभी, सामरिक पेट्रोलियम भंडार लगभग 40 करोड़ बैरल तेल के साथ आधे से अधिक भरा हुआ है। उन्होंने कहा कि यह किसी भी आपात स्थिति के लिए पर्याप्त से अधिक है। उन्होंने कहा, ''आज की मेरी घोषणा के साथ हम ऐसे समय में बाजारों को स्थिर करना और कीमतों में कमी करना जारी रखेंगे, जब अन्य देशों की कार्रवाइयों ने इस तरह की अस्थिरता पैदा की है।''

सीपीसी का अहम महासम्मेलन शनिवार को होगा संपन्न, शी के तीसरे कार्यकाल के लिए पेश होगा प्रस्ताव

बीजिंग। (एजेंसी)।

चीन में सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना (सीपीसी) का 20वां अहम महा सम्मेलन(कांग्रेस) शनिवार को पार्टी की शक्तिशाली और शीर्ष नेताओं वाली केंद्रीय समिति के चुनाव के साथ संपन्न होगा। उम्मीद की जा रही है कि इस महा सम्मेलन के आखिरी दिन शी चिनफिंग के तीसरे कार्यकाल के लिए प्रस्ताव पेश किया जाएगा। सीपीसी हर पांच साल में महा सम्मेलन का आयोजन करती है जिसमें पूरे देश की शाखाओं के कुल 2296 'निर्वाचित' प्रतिनिधि हिस्सा लेते हैं।

20वां महा सम्मेलन एक सप्ताह का है जो पार्टी का संचालन करने वाली केंद्रीय समिति के चुनाव के साथ संपन्न होगा। मौजूदा केंद्रीय समिति में 376 सदस्य हैं जिनमें से 205 पूर्णकालिक सदस्य जबकि 171 वैकल्पिक सदस्य हैं। नयी केंद्रीय समिति की बैठक रविवार को राजनीतिक ब्यूरो का चुनाव करने के लिए होगी जो स्थायी समिति का चुनाव करेगी। स्थायी समिति पार्टी की सबसे शक्तिशाली इकाई है जो देश पर शासन करती है। स्थायी समिति की बैठक भी उसी दिन होगी जिसमें महा सचिव का चुनाव होगा। महा सचिव ही 1.4 अरब आबादी वाले देश का शीर्ष नेता होता है।

मौजूदा राजनीतिक ब्यूरो (पॉलिटिकल ब्यूरो) में 25 सदस्य हैं जबकि स्थायी समिति में 69 वर्षीय चिनफिंग सहित सात सदस्य हैं। चिनफिंग वर्ष 2002 से ही पार्टी के महा सचिव हैं। कयास लगाए जा रहे हैं कि स्थायी समिति रविवार को अप्रत्याशित रूप से शी को तीसरे कार्यकाल के लिए महा सचिव बनाने का प्रस्ताव किया जाएगा। चिनफिंग इस साल सीपीसी प्रमुख और राष्ट्रपति के तौर पर अपना 10 साल का कार्यकाल पूरा कर रहे हैं। पार्टी संस्थापक माओत्से तुंग के बाद वह पहले चीनी नेता होंगे जो सत्ता में तीसरे कार्यकाल तक कायम रहेंगे। माओत्से तुंग ने करीब तीन दशक तक शासन किया। पर्यवेक्षकों का कहना है कि नया कार्यकाल मिलने का अभिप्राय चिनफिंग का भी माओ की तरह जीवनपर्यंत सत्ता में रहना हो सकता है। चुनाव प्रक्रिया संपन्न होने के बाद चिनफिंग नयी स्थायी समिति के साथ मीडिया के सामने आएंगे।इसके लिए चीन में पहले ही मीडिया कर्मियों का जमावड़ा जुट चुका है।

डब्ल्यूएचओ ने चेताया, अभी खत्म नहीं हुआ कोरोना फिर चौंका सकता हैं

जिनेवा (एजेंसी)।

कोरोना अभी देश और दुनिया से खत्म नहीं हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्ल्यूएचओ ने भी चिंता जाहिर की है। इतना ही नहीं डब्ल्यूएचओ ने भविष्य में हालात और बिगड़ने की संभावनाओं से भी इनकार नहीं किया है। खास बात है कि दुनिया के कुछ हिस्सों में नए सब वेरिएंट्स चिंताएं बढ़ा रहे हैं। साथ ही संगठन ने 5 इमरजेंसी के लिहाज से पांच बातों का ध्यान रखने की सलाह दी है। डब्ल्यूएचओ प्रमुख टेडरोस अधानोम घेब्रेएसस ने कहा, महामारी ने हमें पहले भी चौंकाया है और दोबारा भी चौंका सकती है। डब्ल्यूएचओ ने चेताया, 'दुनिया के कुछ हिस्सों में लोगों को लगता है कि महामारी खत्म हो गई है। यह सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ी घटना बनी हुई है, जो दुनिया की आबादी के स्वास्थ्य पर विपरीत और काफी मजबूती से असर डाल रही है।'

संगठन की तरफ से महामारी के खत्म करने के लिए पांच बातों पर जोर देने की सलाह दी गई है। इसमें कोविड के वेरिएंट्स की ट्रैकिंग, मरीजों के इलाज के लिए बढ़ती मेडिकल क्षमता, टीकाकरण, सस्ते इलाज तक लोगों की पहुंच और महामारी के खिलाफ तैयार रहने के लिए मजबूत वैश्विक ढांचा शामिल है। डब्ल्यूएचओ की अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियम आपातकालीन समिति ने पिछले सप्ताह अपनी तिमाही मूल्यांकन बैठक के बाद कहा कि कोविड-19 के गंभीर मामलों में गिरावट के बावजूद और साप्ताहिक मौतों की गिरती संख्या, कोविड-19 से होने वाली मौतें फिर भी श्वसन वायरस की तुलना में अधिक है।

समिति ने कहा कि इनका पूर्ण प्रभाव अभी भी पूरी तरह से समझा नहीं गया है और कोविड-19 से संबंधित जटिलताओं और इसके बाद की स्थितियों के बारे में भी चेतावनी दी। समिति ने कहा कि इसका प्रकोप उत्तरी गोलार्ध में आगामी सर्दियों के मौसम में भी विकसित हो सकता है। समिति ने कहा कि भविष्य के वेरिएंट की आनुवंशिक और एंटीजेनिक विशेषताओं का अभी तक विश्वसनीय रूप से अनुमान नहीं लगाया जा सकता है और विकसित होने वाले वेरिएंट वर्तमान टीकों और चिकित्सा विज्ञान के लिए चुनौतियां हो सकते हैं।

संपादकीय

चीन से चौकस

हालांकि, चीन का अपने तमाम पड़ोसियों से सीमा विवाद व टकराव रहा है लेकिन ताइवान व भारत उसकी प्राथमिकता में रहे हैं। शी जिनपिंग ने घोषणा की है कि पीएलए आधुनिक सैन्य तकनीकों व प्रशिक्षण के जरिये युद्ध की तैयारी में जुटेगी और लड़ने व जीतने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ेगी। जाहिर है सामरिक प्रतिरोध की प्रणाली स्थापित करने की तरफ चीन बढ़ रहा है।

सैन्य मंसूबों को गंभीरता से ले भारत/ सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं राष्ट्रीय कांग्रेस से छन-छन कर आ रही खबरें संकेत दे रही हैं कि आने वाले दिनों में चीन के साम्राज्यवादी तेवर और मुखर होंगे। उसका फोकस सेना के आधुनिकीकरण पर बना रहेगा। ऐसे हालात में जब चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ऐतिहासिक रूप से तीसरी बार सत्ता पर काबिज होने जा रहे हैं, भारत की चिंताएं बढ़ना स्वाभाविक होना चाहिए। वे अब पिछले कई दशकों के सबसे शक्तिशाली चीनी नेता बनने वाले हैं। बीसवीं राष्ट्रीय कांग्रेस में शी जिनपिंग संकेत दे चुके हैं कि उनके अगले कार्यकाल में सैन्य आधुनिकीकरण उनकी प्राथमिकता रहेगी। उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि वर्ष 2027 में अपनी स्थापना की शताब्दी मनाने जा रही पीपुल्स लिबरेशन आर्मी को आधुनिक हथियारों व नई तकनीकों से लैस किया जायेगा। यानी सैन्य संगठन के वैश्विक मानकों के अनुरूप सेना का कायाकल्प करके दीर्घकालिक लक्ष्यों को हासिल करने का प्रयास किया जायेगा। हालांकि, चीन का अपने तमाम पड़ोसियों से सीमा विवाद व टकराव रहा है लेकिन ताइवान व भारत उसकी प्राथमिकता में रहे हैं। शी जिनपिंग ने घोषणा की है कि पीएलए आधुनिक सैन्य तकनीकों व प्रशिक्षण के जरिये युद्ध की तैयारी में जुटेगी और लड़ने व जीतने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ेगी। जाहिर है सामरिक प्रतिरोध की प्रणाली स्थापित करने की तरफ चीन बढ़ रहा है। यहां तक कि अमेरिका पर निशाना साधते हुए शी ने चेतावनी दी है कि चीन वन चाइना पॉलिसी के तहत ताइवान को मुख्य भूमि से जोड़ने के लिये बल प्रयोग करने से पीछे नहीं हटेगा। चीन में कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक माओत्से तुंग की राजनीतिक विचारधारा थी कि 'सत्ता बंदूक की नोक से निकलती है।' उनके वारिस आज माओ के राजनीतिक सिद्धांत का अनुसरण करते हुए साम्राज्यवादी मंसूबों को विस्तार दे रहे हैं। सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय कांग्रेस से मिल रहे संकेतों से चीन के इन्हीं इरादों का पता चलता है, जिसके चलते भारत को सतर्क रहने की जरूरत होगी। दरअसल, राष्ट्रीय कांग्रेस में शी जिनपिंग के बयानों से साफ संकेत हैं कि चीन अपने आक्रामक तेवर कम करने के मूड में नहीं है। रूस-यूक्रेन संघर्ष के चलते पूरी दुनिया गहरी मंदी की ओर बढ़ रही है जिसका असर चीन की अर्थव्यवस्था पर भी गहरे तक पड़ा है। इसके बावजूद चीन कठोर ढंग से कोविड को लेकर ज़ीरो टॉलरेन्स की नीति का अनुसरण कर रहा है। लाखों लोगों को घरों में नजरबंद कर दिया गया है। हालांकि इससे देश की अर्थव्यवस्था इससे बुरी तरह प्रभावित हो रही है। बहरहाल, इसके बावजूद चीन आर्थिक पुनरुत्थान की प्राथमिकता के जरिये छोटे देशों की संप्रभुता से खिलवाड़ का क्रम भी जारी रखेगा। वहीं दूसरी ओर बीजिंग के परमाणु विस्तार कार्यक्रम में तेजी को लेकर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को चिंतित होना ही चाहिए। इसकी मूल वजह यह भी है कि अमेरिकी रक्षा विभाग पेंटागन की एक रिपोर्ट चेताती है कि चीन के पास वर्ष 2027 तक सात सौ परमाणु हथियार मौजूद होंगे। वहीं अनुमान है कि वर्ष 2030 तक इनकी संख्या एक हजार तक होने की आशंका है। हालांकि, कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय कांग्रेस में शी ने भारत को लेकर कोई उल्लेख नहीं किया है, लेकिन वर्ष 2020 में चीनी सेना से भारतीय सेना के गलवान घाटी में हुए संघर्ष के वीडियो क्लिप की स्क्रीनिंग सम्मेलन के दौरान करना चीन के मंसूबों को उजागर कर ही देता है। जो अपरोक्ष रूप से भारत पर मानसिक दबाव बनाने की कुत्सित चाल ही है। बहरहाल, पीएलए के तेज आधुनिकीकरण की कोशिशों को देखते हुए भारतीय सशस्त्र बलों के लिये युद्ध की तैयारियों को ऊंचे स्तर तक ले जाने की जरूरत होगी।

सूक्ति

अतिसंघर्ष से चंदन में भी आग प्रकट हो जाती है, उसी प्रकार बहुत अवज्ञा किए जाने पर ज्ञानी के भी हृदय में भी क्रोध उपज जाता है। - महर्षि वाल्मीकि

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पता है। शिक्षा सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती है. -चाणक्य

लॉफिंग ज़ोन

एक अफीमची नशे की तरंग में हुक्के की नली की बजाय पास खड़े भैंसे के कट्टे की दुम मुंह में डाल कर कश लगा रहा था. इतने में उसका एक दोस्त आकर बोला, 'अरे यह क्या कर रहे हो? हुक्के की नली की बजाय कट्टे की दुम मुंह में डाल कर कश लगा रहे हो.'

अफीमची कट्टे की दुम मुंह से निकाल कर मुंह साफ करता हुआ बोला, 'मैं भी सोच रहा था कि फैनियों का स्वाद कहां से आ रहा है.'

☺ ☺ ☺

एक देहाती फोटोग्राफर की दुकान पर जा कर बोला, 'भाई साहब एक पासपोर्ट साइज की फोटो बनवानी है लेकिन फोटो में मेरे पांव की नई जूती भी नजर आनी चाहिए.'

फोटोग्राफर बोला, 'जूती जरूर नजर आएगी बस तुम सिर्फ इतना करो कि जूती अपने सिर पर रख लो.'

☺ ☺ ☺

मनु, 'मम्मी मैं कल स्कूल नहीं जाऊंगा, कल हमारी टीचर बता रही थी पांच और पांच दस होते हैं. आज कहने लगी आठ और दो दस होते हैं. उन्हें तो खुद भी कुछ नहीं आता हमें क्या पढ़ाएंगी.'

☺ ☺ ☺

पापा, 'मनु कमरे में जाकर देखो, वाल क्लॉक चल रहा है या नहीं.'

मनु, 'पापा चल तो नहीं रहा बस खड़ा दुम हिला रहा है.'

वैश्विक भुखमरी सूचकांक में भारत के बारे में आंकलन सही नहीं महसूस हो रहा है

लेखक - प्रहलाद सबनानी

युद्ध की विभीषिका झेल रहे एथीयोपिया में नागरिक अपनी भूख मिटाने के लिए घास जैसे भारी पदार्थों को खाकर अपना जीवन गुजारने को मजबूर हैं। इन विपरीत परिस्थितियों के बीच जीवन यापन करने वाले नागरिकों को भुखमरी के मामले में भारत के नागरिकों से बेहतर स्थिति में बताया गया है। वहीं दूसरी ओर भारत में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत 80 करोड़ नागरिकों को केंद्र सरकार द्वारा प्रतिमाह 5 किलो मुफ्त अनाज उपलब्ध कराया जा रहा है ताकि इन लोगों को खाने पीने सम्बंधी किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं हो। फिर भी भारत के नागरिकों को भुखमरी सूचकांक में ईथीयोपिया के नागरिकों की तुलना में इतना नीचे बताया गया है।

अभी हाल ही में एक अंतरराष्ट्रीय संस्थान ने वैश्विक भुखमरी सूचकांक जारी किया है। इस सूचकांक में यह बताया गया है कि भारत की तुलना में श्रीलंका, म्यांमार, पाकिस्तान, एथीयोपिया, नेपाल, भूटान आदि देशों में भुखमरी की स्थिति बेहतर है। अर्थात, सर्वे में शामिल किए गए 121 देशों की सूची में श्रीलंका का स्थान 64वां, म्यांमार का 71वां, बांग्लादेश का 84वां, पाकिस्तान का 99वां, एथीयोपिया का 104वां एवं भारत का 107वां स्थान बताया गया है। जबकि पूरा विश्व जानता है कि वर्तमान में श्रीलंका, पाकिस्तान एवं म्यांमार जैसे देशों में खाद्य पदार्थों की भारी कमी है जिसके चलते इन देशों के नागरिकों के लिए दो जून की रोटी जुटाना भी बहुत मुश्किल हो रहा है। जबकि, भारत कई देशों को आज खाद्य सामग्री उपलब्ध करा रहा है। फिर किस प्रकार उक्त सूचकांक बनाकर वैश्विक स्तर पर जारी किए जा रहे हैं। ऐसा आभास हो रहा है कि भारत की आर्थिक तरक्की को विश्व के कई देश अब सहन नहीं कर पा रहे हैं एवं भारत के बारे में इस प्रकार के सूचकांक जारी कर भारत की साख को वैश्विक स्तर पर प्रभावित किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। युद्ध की विभीषिका झेल रहे एथीयोपिया में नागरिक अपनी भूख मिटाने के लिए घास जैसे भारी पदार्थों को खाकर अपना जीवन गुजारने को मजबूर हैं। इन विपरीत परिस्थितियों के बीच जीवन यापन करने वाले नागरिकों को भुखमरी के मामले में भारत के नागरिकों से बेहतर स्थिति में बताया गया है। वहीं दूसरी ओर भारत में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत 80 करोड़ नागरिकों को केंद्र सरकार द्वारा प्रतिमाह 5 किलो मुफ्त अनाज उपलब्ध कराया जा रहा है ताकि इन लोगों को खाने पीने सम्बंधी किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं हो। फिर भी भारत के नागरिकों को भुखमरी सूचकांक में ईथीयोपिया के नागरिकों की तुलना में इतना नीचे बताया गया है। अब कौन इस प्रकार के सूचकांकों पर विश्वास करेगा। यह भी बताया जा रहा है कि इस सूचकांक को आंकने के लिए भारत के 140 करोड़ नागरिकों में से केवल 3000 नागरिकों को ही इस सर्वे में शामिल किया गया था। इस प्रकार सर्वे का सैम्पल बनाते समय भारत जैसे विशाल देश के लिए अपर्याप्त संख्या का उपयोग किया गया है। उक्त सर्वे में अल्पपोषण **(Undernourishment)**, बौनापन अर्थात 5 वर्षों से कम आयु के बच्चों की कम लंबाई रहना **(Stunting)**, 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों का वजन कम रहना **(Wasting)** एवं 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर **(Child Mortality)** को भुखमरी आंकने के मानदंडों के रूप में उपयोग किया गया है। जबकि इंडियन काउन्सिल ओफ मेडिकल रिसर्च की उक्त मानदंडों के माध्यम से भुखमरी आंकने पर अपनी एक अलग राय है। उनके अनुसार भुखमरी आंकने में उक्त मानदंडों का सामान्यतः इससे सीधा सीधा सम्बंध नहीं के बराबर है। इस प्रकार भुखमरी को आंकने के मानदंड भी सही नहीं पाए जा रहे हैं। भारत के 5 वर्ष के बच्चों की कम लम्बाई रहने, कम वजन रहने एवं अकाल मृत्यु के पीछे केवल भुखमरी ही एक कारण नहीं हो सकता अन्य कारणों के चलते भी उक्त तीनों घटनाएं हो सकती हैं। फिर इन तीनों ही घटनाओं के पीछे भुखमरी को कैसे आंका जा सकता है। हां, अल्पपोषण के लिए जरूर भुखमरी को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। पूरे विश्व में आज केवल भारतीय अर्थव्यवस्था ही चमकता हुआ सितारा के तौर पर मानी जा रही है और वर्ष 2022-23 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 7 प्रतिशत की वृद्धि होने की भरपूर सम्भावना है, जो विश्व के किसी भी अन्य बड़े देश की तुलना में सबसे अधिक रहने वाली विकास दर होगी। परंतु, वैश्विक भुखमरी सूचकांक बनाने वाले लोगों ने इन सभी मुद्दों से आंख मूंदकर कार्य किया है और भारतीय नागरिकों की रैंकिंग को 107वें स्थान पर बताया है जब कि एथीयोपिया जैसे देश के नागरिकों से भी पीछे है। इसी कारण से वैश्विक संस्थान अपनी साख खोते जा रहे हैं।

आर्थिक विकास के मामले में हमारे पड़ौसी देशों की भारत से किसी भी प्रकार की तुलना नहीं की जा सकती है। पाकिस्तान का सकल घरेलू उत्पाद 29,200 करोड़ अमेरिकी डॉलर है, बांग्लादेश का 46,100 करोड़ अमेरिकी डॉलर है, श्रीलंका का 8,200 करोड़ अमेरिकी डॉलर है। वहीं भारत का सकल घरेलू उत्पाद 350,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर से भी ऊपर है। परंतु फिर भी भुखमरी का सूचकांक बनाने वाले संस्थानों द्वारा भारत में भुखमरी की स्थिति को हमारे उक्त समस्त पड़ौसी देशों से भी बदतर हालत में बताया गया है। जबकि भारत में प्रति व्यक्ति औसत आय भी तेजी से बढ़ रही है। वर्ष 2001-02 में प्रति व्यक्ति औसत आय 18,118 रुपए थी और यह वर्ष 2021-22 में बढ़कर 174,024 रुपए प्रति व्यक्ति हो गई है। गरीबों की औसत आय तेजी से बढ़ रही है, जिससे आय की असमानता भी कम हो रही है।

अभी हाल ही में यूनाइटेड नेशन्स ने भी एक प्रतिवेदन जारी किया है जिसमें बताया गया है कि भारत में वर्ष 2005-06 से वर्ष 2019-21 के बीच 41.5 करोड़ नागरिकों को गरीबी रेखा से ऊपर ले आया गया है। इस प्रकार भारत में गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों की संख्या बहुत तेजी से कम हुई है। इसी प्रतिवेदन के अनुसार वर्ष 2015-16 में भारत में 36.6 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे थे वहीं यह संख्या वर्ष 2019-21 में ग्रामीण इलाकों में घटकर 21.2 प्रतिशत पर आ गई है। जबकि शहरी क्षेत्रों में यह संख्या उक्त अवधि में 9 प्रतिशत से घटकर 5.5 प्रतिशत पर नीचे आ गई है। यानी प्रति वर्ष लगभग 3 करोड़ नागरिकों को गरीबी से बाहर लाया जा रहा है। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे नागरिकों की संख्या के बारे में तो विश्व बैंक के एक अन्य पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर (शोध पत्र) में बताया गया है कि वर्ष 2011 में भारत में गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे व्यक्तियों की संख्या 22.5 प्रतिशत थी जो वर्ष 2019 में घटकर 10.2 प्रतिशत पर नीचे आ गई है अर्थात गरीबों की संख्या में 12.3 प्रतिशत की गिरावट दृष्टिगोचर है। यूनाइटेड नेशन्स एवं विश्व बैंक के शोध पत्र में भारत में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों की संख्या में अंतर इसलिए है क्योंकि दोनों के द्वारा इसे आंकते समय अलग अलग मापदंडों का उपयोग किया गया है। यूनाइटेड नेशन्स की तर्ज पर ही अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी हाल ही में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि वैश्विक मंदी के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक पटल पर एक चमकते हुए सितारे के रूप में दिखाई दे रही है। वैश्विक आर्थिक मंदी के बीच आज पूरी दुनिया भारत की ओर आशाभरी नजरों से देख रही है। वही अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने भी भारत द्वारा हाल ही के वर्षों में हासिल किए गए आर्थिक विकास की भरपूर सराहना की है। आईएमएफ द्वारा जारी किए गए एक प्रतिवेदन के अनुसार, मौजूदा विकास दर के आधार पर भारत 2027 में जर्मनी एवं 2029 में जापान से आगे निकलकर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। आईएमएफ के अनुसार, वर्ष 2027-28 में भारतीय अर्थव्यवस्था जापान के 5.17 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर के मुकाबले आगे बढ़कर 5.36 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की बन जाएगी।

(लेखक सेवा निवृत्त उप महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक)

देवताओं को अमृतपान कराकर अमर किया था धन्वन्तरि ने

(धनतेरस (22 अक्तूबर) पर विशेष/ लेखक- - योगेश कुमार गोयल)

दीवाली से दो दिन पूर्व 'धनतेरस' नामक त्यौहार मनाया जाता है, , जो इस वर्ष 22 अक्तूबर को मनाया जा रहा है। हालांकि कुछ लोगों द्वारा यह पर्व 23 अक्तूबर को भी मनाया जाएगा। दरअसल इस बार धनतेरस मनाने की तिथि को लेकर भ्रम बना रहा है। धनतेरस के प्रचलन का इतिहास बहुत पुराना माना जाता है। यह त्यौहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को मनाया जाता है तथा इस दिन आरोग्य के देवता भगवान धन्वन्तरि एवं धन व समृद्धि की देवी लक्ष्मी का पूजन किया जाता है।

धनतेरस मनाए जाने के संबंध में जो प्रचलित कथा है, उसके अनुसार कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन देवताओं और असुरों द्वारा मिलकर किए जा रहे समुद्र मंथन के दौरान समुद्र से निकले नवरत्नों में से एक धन्वन्तरि ऋषि भी थे, जो जनकल्याण की भावना से अमृत कलश सहित अवतरित हुए थे। धन्वन्तरि ऋषि ने समुद्र से निकलकर देवताओं को अमृतपान कराया और उन्हें अमर कर दिया। यही वजह है कि धन्वन्तरि को 'आरोग्य का देवता' माना जाता है और आरोग्य तथा दीर्घायु प्राप्त करने के लिए ही लोग इस दिन उनकी पूजा करते हैं।

इस दिन मृत्यु के देवता यमराज के पूजन का भी विधान है और उनके लिए भी एक दीपक जलाया जाता है, जो 'यम दीपक' कहलाता है। यमराज के पूजन के संबंध में एक कथा प्रचलित है। धार्मिक ग्रथों में इस कथा का वर्णन इस प्रकार किया गया है:-

एक बार यमराज ने अपने दूतों से प्रश्न किया कि क्या प्राणियों के प्राण हरते समय तुम्हें कभी किसी प्राणी पर दया भी आई? यह प्रश्न सुनकर सभी यमदूतों ने कहा, ''महाराज, हम सब तो आपके सेवक हैं और आपकी आज्ञा का पालन करना ही हमारा धर्म है। अतः दया और मोह-माया से हमारा कुछ लेना-देना नहीं है।''

यमराज ने उनसे जब निर्भय होकर सच-सच बताने को कहा, तब यमदूतों ने बताया कि उनके साथ एक बार वास्तव में ऐसी एक घटना घट चुकी है। यमराज ने विस्तार से उस घटना के बारे में बताने को कहा तो यमदूतों ने बताया कि एक दिन हंस नाम का एक राजा शिकार के लिए निकला और घने जंगलों में अपने साथियों से बिछुड़कर दूसरे राज्य की सीमा में पहुंच गया। उस राज्य के राजा हेमा ने राजा हंस का राजकीय सत्कार किया और उसी दिन हेमा की पत्नी ने एक अति सुन्दर पुत्र को जन्म दिया लेकिन ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की कि विवाह के मात्र चार दिन बाद ही इस बालक की मृत्यु हो

जाएगी। यह दुःखद रहस्य जानकर हेमा ने अपने नवजात पुत्र को यमुना के तट पर एक गुफा में भिजवा दिया और वहीं पर उसके लालन-पालन की शाही व्यवस्था कर दी गई और बालक पर किसी युवती की छाया भी नहीं पड़ने दी लेकिन विधि का विधान तो अडिग था। एक दिन राजा हंस की पुत्री घूमते-घूमते यमुना तट पर निकल आई और राजकुमार की उस पर नजर पड़ गई। उसे देखते ही राजकुमार उस पर मोहित हो गया। राजकुमारी की भी यही दशा थी। अतः दोनों ने उसी समय गंधर्व विवाह कर लिया लेकिन विधि के विधान के अनुसार 4 दिन बाद राजकुमार की मृत्यु हो गई। यमदूतों ने यमराज को बताया कि उन्होंने ऐसी सुन्दर जोड़ी अपने जीवन में इससे पहले कभी नहीं देखी थी। वे दोनों कामदेव और रति के समान सुन्दर थे। इसीलिए राजकुमार के प्राण हरने के बाद नवविवाहिता राजकुमारी का करूण विलाप सुनकर उनका कलेजा कांप उठा।

घटना का पूर्ण वृतांत सुनने के बाद यमराज ने यमदूतों से कहा कि कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिन धन्वन्तरि ऋषि का पूजन करने तथा यमराज के लिए दीप दान करने से इस प्रकार की अकाल मृत्यु से बचा जा सकता है।

ऐसी मान्यता है कि उसके बाद से ही इस दिन धन्वन्तरि ऋषि और यमराज का पूजन किए जाने की प्रथा आरंभ हुई। धनतेरस के दिन घर के टूटे-फूटे बर्तनों के बदले तांबे, पीतल अथवा चांदी के नए बर्तन तथा आभूषण खरीदना शुभ माना जाता है। कुछ लोग नई झाड़ू खरीदकर उसका पूजन करना भी इस दिन शुभ मानते हैं।

(चिंतन-मनन)

अंदर से खूबसुरत बनिये संसार आपकी पूजा करेगा

स्मार्ट दिखने के लिए लोग क्या नहीं करते ब्यूटी पार्लर जाते हैं, महंगे प्रीम पाउडर और ब्यूटी टिप्स को आजमाते हैं। सारे उपाय करने के बावजूद बढ़ती उम्र की निशानियों को उम्र की एक सीमा तक ही छिपा सकते हैं। अंत में खूबसूरती ढ़ल जाती है और जिस सुन्दरता पर लोग नाज करते हैं वह लोगों से दगा कर जाती है। इसलिए संतों और ज्ञानियों ने कहा कि रूप के धन पर इतराना नहीं चाहिए। सबसे उत्तम धन ज्ञान है और इसकी सुन्दरता दिन ब दिन बढ़ती जाती है। इसलिए बाहरी सुन्दरता को संवारने पर समय नष्ट करने की बजाय अंदर की सुन्दरता को निखारने का प्रयास करना चाहिए। व्यवहारिक जीवन में आपने देखा होगा कि किसी की सुंदरता को देखकर आपका मन चाहता होगा कि बार-बार उसे देखें। लेकिन जब आप उस रूपवान व्यक्ति के पास पहुंचते हैं उसके व्यक्तित्व को करीब से जानते हैं तो उससे नफरत होने लगती है। इसके विपरीत किसी कुरूप व्यक्ति को जब आप जानने लगते हैं उसके अंदर के गुण को समझने लगते हैं तो उस कुरूप व्यक्ति के प्रति लगाव और स्नेह बढ़ जाता है। देवी सीता के पिता महाराजा जनक के दरबार में हुई एक घटना इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। इनके शासन काल अष्टावप्र नामक एक विद्वान थे। अपने नाम के समान अष्टावप्र का पूरा शरीर टेढ़ा मेढ़ा था। एक बार यह महाराजा जनक की सभा में पहुंचे। ऊंचे आसन पर बैठे सभासद अष्टावप्र को देखकर हंसने लगे। महाराज जनक ने देखा कि सामने से अष्टावप्र पधार रहे हैं। इन्हें देखकर ही सभासद हंस रहे हैं। महाराज जनक अपने सिंहासन से उतरकर अष्टावप्र के पास पहुंचे। इन्हें आदर पूर्वक लाकर अपने सिंहासन पर बैठाया और सभासदों से कहा कि महात्मा अष्टावप्र के चरण धोने हेतु जल लेकर आएं। महाराज ने स्वयं अपने हाथों से अष्टावप्र की सेवा की और सभासदों से कहा कि आप सब मूर्ख हैं जो बाहरी सौन्दर्य को पहचानते हैं। असली सौन्दर्य को आपने जाना ही नहीं। असली सुन्दरता ज्ञान है जो महात्मा अष्टावप्र के पास है। यह मेरे गुरू के समान हैं। सभासदों को सिर नीचे झुक गया। अष्टावप्र ने कई काव्य लिखे हैं। इन्होंने गीता की भी रचना की है जो अष्टावप्र गीता के नाम से विख्यात है।

धनतेरस

जिस प्रकार देवी लक्ष्मी सागर मंथन से उत्पन्न हुई थी उसी प्रकार भगवान धनवन्तरि भी अमृत कलश के साथ सागर मंथन से उत्पन्न हुए हैं। देवी लक्ष्मी हालांकि की धन देवी हैं परन्तु उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए आपको स्वस्थ्य और लम्बी आयु भी चाहिए यही कारण है दीपावली दो दिन पहले से ही यानी धनतेरस से ही दीपामालाएं सजने लगती हें।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन ही धन्वन्तरि का जन्म हुआ था इसलिए इस तिथि को धनतेरस के नाम से जाना जाता है। धन्वन्तरी जब प्रकट हुए थे तो उनके हाथो में अमृत से भरा कलश था। भगवान धन्वन्तरी चुकि कलश लेकर प्रकट हुए थे इसलिए ही इस अवसर पर बर्तन खरीदने की परम्परा है। कहीं कहीं लोकमान्यता के अनुसार यह भी कहा जाता है कि इस दिन धन (वस्तु) खरीदने से उसमें 13 गुणा वृद्धि होती है। इस अवसर पर धनिया के बीज खरीद कर भी लोग घर में रखते हैं। दीपावली के बाद इन बीजों को लोग अपने बाग-बगीचों में या खेतों में बोते हैं।

प्रथा

धनतेरस के दिन चांदी खरीदने की भी प्रथा है। अगर सम्भव न हो तो कोइ बर्तन खरिदे। इसके पीछे यह कारण माना जाता है कि यह चन्द्रमा का प्रतीक है जो शीतलता प्रदान करता है और मन में संतोष रूपी धन का वास होता है। संतोष को सबसे बड़ा धन कहा गया है। जिसके पास संतोष है वह स्वस्थ है सुखी है और वही सबसे धनवान है। भगवान धन्वन्तरी जो चिकित्सा के देवता भी हैं उनसे स्वास्थ्य और सेहत की कामना के लिए संतोष रूपी धन से बड़ा कोई धन नहीं है। लोग इस दिन ही दीपावली की रात लक्ष्मी गणेश की पूजा हेतु मूर्ति भी खरीदते हें। यह दिन व्यापारियों

कथा

धनतेरस की शाम घर के बाहर मुख्य द्वार पर और आंगन में दीप जलाने की प्रथा भी है। इस प्रथा के पीछे एक लोक कथा है, कथा के अनुसार किसी समय में एक राजा थे जिनका नाम हेम था। दैव कृपा से उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। 7ज्योंतिषियों ने जब बालक की कुण्डली बनाई तो पता चला कि बालक का विवाह जिस दिन होगा उसके ठीक चार दिन के बाद वह मृत्यु को प्राप्त होगा। राजा इस बात को जानकर बहुत दुखी हुआ और राजकुमार को ऐसी जगह पर भेज दिया जहां किसी स्त्री की परछाई भी न पड़े। दैवयोग से एक दिन एक राजकुमारी उधर से गुजरी और दोनों एक दूसरे को देखकर मोहित हो गये और उन्होंने गन्धर्व विवाह कर लिया। विवाह के पश्चात विधि का विधान सामने आया और विवाह के चार दिन बाद यमदूत उस राजकुमार के प्राण लेने आ पहुंचे। जब यमदूत राजकुमार प्राण ले जा रहे थे उस वक्त नवविवाहिता उसकी पत्नी का विलाप सुनकर उनका हृदय भी द्रवित हो उठा परंतु विधि के अनुसार उन्हें अपना कार्य करना पड़ा। यमराज को जब यमदूत यह कह रहे थे उसी वक्त उनमें से एक ने यमदेवता से विनती की हे यमराज क्या कोई ऐसा उपाय नहीं है जिससे मनुष्य अकाल मृत्यु के लेख से मुक्त हो जाए। दूत के इस प्रकार अनुरोध करने से यमदेवता बोले हे दूत अकाल मृत्यु तो कर्म की गति है इससे मुक्ति का एक आसान तरीका मैं तुम्हें बताता हूं सो सुनो। कार्तिक कृष्ण पक्ष की रात जो प्राणी मेरे नाम से पूजन करके दीप माला दक्षिण दिशा की ओर भेट करता है उसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता है। यही कारण है कि लोग इस दिन घर से बाहर दक्षिण दिशा की ओर दीप जलाकर रखते हैं।

धन्वंतरि

धन्वन्तरि देवताओं के वैद्य हैं और चिकित्सा के देवता माने जाते हैं इसलिए चिकित्सकों के लिए धनतेरस का दिन बहुत ही महत्व पूर्ण होता है। धनतेरस के संदर्भ में एक लोक कथा प्रचलित है कि एक बार यमराज ने यमदूतों से पूछा कि प्राणियों को मृत्यु की गोद में सुलाते समय तुम्हारे मन में कभी दया का भाव नहीं आता क्या। दूतों ने यमदेवता के भय से पहले तो कहा कि वह अपना कर्तव्य निभाते है और उनकी आज्ञा का पालन करते हें परंतु जब यमदेवता ने दूतों के मन का भय दूर कर दिया तो उन्होंने कहा कि एक बार राजा हेमा के ब्रह्मचारी पुत्र का प्राण लेते समय उसकी नवविवाहिता पत्नी का विलाप सुनकर हमारा हृदय भी पसीज गया लेकिन विधि के विधान के अनुसार हम चाह कर भी कुछ न कर सके। एक दूत ने बातों ही बातों में तब यमराज से प्रश्न किया कि अकाल मृत्यु से बचने का कोई उपाय है क्या। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यम देवता ने कहा कि जो प्राणी धनतेरस की शाम यम के नाम पर दक्षिण दिशा में दीया जलाकर रखता है उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती है। इस मान्यता के अनुसार धनतेरस की शाम लोग आँगन मे यम देवता के नाम पर दीप जलाकर रखते हैं। इस दिन लोग यम देवता के नाम पर व्रत भी रखते हैं।धनतेरस के दिन दीप जलाककर भगवान धन्वन्तरि की पूजा करें। भगवान धन्वन्तरी से स्वास्थ और सेहतमंद बनाये रखने हेतु प्रार्थना करें। चांदी का कोई बर्तन या लक्ष्मी गणेश अंकित चांदी का सिक्का खरीदें। नया बर्तन खरीदे जिसमें दीपावली की रात भगवान श्री गणेश व देवी लक्ष्मी के लिए भोग चढ़ाएं।

धनतेरस पर समृद्धि देते हैं कुबेर..

समस्त धन सम्पदा और ऐश्वर्य के स्वामी कुबेर के लिए धनतेरस के दिन शाम को 13 दीप समर्पित किए जाते हैं। कुबेर भूगर्भ के स्वामी हैं। कुबेर की पूजा से मनुष्य की आंतरिक ऊर्जा जागृत होती है और धन अर्जन का मार्ग प्रशस्त होता है।

निम्न मंत्र द्वारा चंदन, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करें-

कुबेर मंत्र -

'यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन-धान्य अधिपतये

धन-धान्य समृद्धि में देहि दापय स्वाहा।'

धनतेरस पूजन में क्या करें

(अ) कुबेर पूजन

शुभ मुहूर्त में अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान में नई गादी बिछाएं अथवा पुरानी गादी को ही साफ कर पुनः स्थापित करें।

पश्चात नवीन बसना बिछाएं।

सायंकाल पश्चात तेरह दीपक प्रज्वलित कर तिजोरी में कुबेर का पूजन करते हैं।

कुबेर का ध्यान

निम्न ध्यान मंत्र बोलकर भगवान कुबेर पर फूल चढ़ाएं -

श्रेष्ठ विमान पर विराजमान, गरुड़मणि के समान आभावाले, दोनों हाथों में गदा एवं वर धारण करने वाले, सिर पर श्रेष्ठ मुकुट से अलंकृत तुंदिल शरीर वाले, भगवान शिव के प्रिय मित्र निधीश्वर कुबेर का मैं ध्यान करता हूं।

इसके पश्चात निम्न मंत्र द्वारा चंदन, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करें -

यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन-धान्य अधिपतये धन-धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।

इसके पश्चात कपूर से आरती उतारकर मंत्र पुष्पांजलि अर्पित करें।

(ब) यम दीपदान

* तेरस के सायंकाल किसी पात्र में तिल के तेल से युक्त दीपक प्रज्वलित करें।

* पश्चात गंध, पुष्प, अक्षत से पूजन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके यम से निम्न प्रार्थना करें-

मृत्युना दंडपाशाभ्याम् कालेन श्यामया सह।

त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रयतां मम।

अब उन दीपकों से यम की प्रसन्नता के लिए सार्वजनिक स्थलों को प्रकाशित करें।

इसी प्रकार एक अखंड दीपक घर के प्रमुख द्वार की देहरी पर किसी प्रकार का अन्न (साबूत गेहूं या चावल आदि) बिछाकर उस पर रखें। (मान्यता है कि इस प्रकार दीपदान करने से यम देवता के पाश और नरक से मुक्ति मिलती है।)

यमराज पूजन

* इस दिन यम के लिए आटे का दीपक बनाकर घर के मुख्य द्वार पर रखें।

* रात को घर की स्त्रियां दीपक में तेल डालकर चार बतियां जलाएं।

* जल, रोली, चावल, गुड़, फूल, नैवेद्य आदि सहित दीपक जलाकर यम का पूजन करें।

दो से अधिक रत्नों से करें परहेज

कई बार एक व्यक्ति दो या दो से अधिक रत्न धारण कर लेते हैं। आजकल तो व्यक्ति पांचों उंगलियों में और एक से अधिक रत्न एक ही उंगली में धारण कर लेते हैं। इससे रत्नों का फल निष्फल या विपरीत भी हो जाता है। योतिष शास्त्रानुसार दो या दो से अधिक रत्नों को धारण करते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। समान तत्व वाली राशियों के स्वामी के तथा मित्र ग्रहों के रत्नों को ही एकसाथ धारण करना चाहिए। शत्रु ग्रहों के रत्नों को धारण करना निषेध है।

र त्नों का ग्रहों की राशियों से केवल गहरा संबंध ही नहीं है, वह व्यक्ति के जीवन को व्यापक स्तर पर प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। अगर रत्नों का सही ढंग से चुनाव किया जाए तो वे धारण करने वाले व्यक्ति को विरोधी शक्तियों का डटकर सामना करने की शक्ति और जीवन ऊर्जा से भरपूर बनाने में सामर्थ्य देते हैं।

रत्न धारण से जो ग्रह शुभ स्थानों के स्वामी होकर अशुभ स्थानों में स्थित हो जाता है तो वह निर्बल हो जाता है तो इससे संबंधित रत्न धारण से ग्रह को शक्ति मिलती है और जो अशुभ स्थान का स्वामी हो, पाप ग्रहों की संगत में बैठा हो, उनसे देखा जाता हो या अन्य कारण से दूषित हो तो उससे संबंधित रत्न पहनने का अर्थ होगा कि उसकी विघटनकारी, अमंगलकारी शक्ति को उत्प्रेरित करना है। इसके साथ जो शुभ ग्रह है और अन्य कारणों से भी शुभ है तो उसका रत्न पहनना निःसंदेह उपयोगी होगा, क्योंकि उसकी प्रखरता में वृध्दि होने से संभावित अवरोध भी दूर होंगे। सही रत्न का चुनाव कर शुभ मुहूर्त में अंगूठी बनवाकर व शुभ मुहूर्त में सही उंगली में अंगूठी धारण करने पर ही रत्न लाभकारी होता है।

कई बार एक व्यक्ति दो या दो से अधिक रत्न धारण कर लेते हैं। आजकल तो व्यक्ति पांचों उंगलियों में और एक से अधिक रत्न एक ही उंगली में धारण कर लेते हैं। इससे रत्नों का फल निष्फल या विपरीत भी हो जाता है। योतिष शास्त्रानुसार दो या दो से अधिक रत्नों को धारण करते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। समान तत्व वाली राशियों के स्वामी के तथा मित्र ग्रहों के रत्नों को ही एकसाथ धारण करना चाहिए। शत्रु ग्रहों के रत्नों को धारण करना निषेध है। ग्रहों के लिए निर्धारित उंगलियों में ही रत्न धारण करना चाहिए तभी प्रभावशाली होता है। उदाहरण के तौर पर माणिक अनामिका में, मूंगा तर्जनी-अनामिका में, मोती तर्जनी-अनामिका, पन्ना-कनिष्ठा में, पुखराज-तर्जनी में, हीरा तर्जनी-अनामिका में, नीलम, गोमेद व लसुनिया मध्यमा में धारण करना चाहिए। तर्जनी गुरू की, मध्यमा शनि की, अनामिका सूर्य की तथा कनिष्ठा बुध की उंगलियां मानी गई हैं। रत्न धारण का प्रभाव तभी होता है, जब कौन-सा रत्न धारण करना का सही निर्णय लिया जाए। रत्न निर्दोष होना चाहिए। सही वजन का होना चाहिए। सही धातु में अंगूठी बनवाकर शुभ मुहूर्त में सही उंगली में निषेध रत्नों के साथ न पहनने से ही लाभकारी होता है।

आइए जानते हैं कि किस राशि के ग्रह के रत्न को किस रत्न के साथ नहीं पहनना चाहिए

राशि ग्रह रत्न

मेष मंगल मूंगा-पन्ना-हीरा

वृषभ शुक्र हीरा-मूंगा

मिथुन बुध पन्ना-मूंगा-नीलम

कर्क चन्द्र मोती-मूंगा

सिंह सूर्य माणिक-नीलम-हीरा

कन्या बुध पन्ना-मूंगा-नीलम

तुला शुक्र हीरा-मूंगा

वृश्चिक मंगल मूंगा-पन्ना-हीरा

धनु गुरू पुखराज-हीरा-पन्ना

मकर शनि नीलम-माणिक-पुखराज

कुंभ शनि नीलम-माणिक-पुखराज

मीन गुरू पुखराज-हीरा-पन्ना

धनतेरस पर क्यों खरीदे जाते हैं बर्तन

धनतेरस दीपावली से दो दिन पहले अदित तिथि में मनाई जाती है। जिस प्रकार लक्ष्मीजी समुद्र मंथन से उत्पन्न हुई थी, उसी प्रकार भगवान धनवंतरी धन त्रयोदशी के दिन अमृत कलश के साथ समुद्र मंथन से उत्पन्न हुए हैं। दीपावली के दो दिन पहले से ही यानी धनतेरस से ही दीप प्रज्वलित करने का प्रचलन भी है।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन ही भगवान धनवंतरी का जन्म हुआ था, इसलिए इस तिथि को धन त्रयोदशी या धनतेरस के रूप में जाना जाता है।

भगवान धनवंतरी जब प्रकट हुए थे तो उनके हाथों में अमृत से भरा कलश था। भगवान धनवंतरी चूंकि कलश लेकर प्रकट हुए थे इसलिए इस अवसर पर बर्तन खरीदने की परंपरा है।

कहीं-कहीं लोकमतानुसार कहा जाता है कि इस दिन बर्तन, चांदी की वस्तु आदि की खरीदारी करने से उसमें तेरह गुना वृद्धि होती है। इस अवसर पर धनिया के बीज खरीद कर भी लोग घर में रखते हैं।

दीपावली के बाद इन बीजों को लोग अपने खेतों में बोते हैं। कुछ लोग क्यारियों में भी बोते है। धनिया स्वास्थ्य के लिए उत्तम तो होता ही है, इसे स्वाद को बढ़ाने वाला भी माना गया है।

धनतेरस के दिन चांदी के बर्तन या जेवर खरीदने का भी प्रचलन है। माना जाता है कि यह चन्द्रमा का प्रतीक है, जो शीतलता प्रदान करता है और इसी दिन चन्द्र का हस्त नक्षत्र भी है।

पद्मावती मंत्र से पाएं सुख-समृद्धि

मंत्रों का जाप करने से मनुष्य को आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है। निष्ठा और विधिपूर्वक करने से इच्छित फल भी प्राप्त होता है। महालक्ष्मी पूजन में इस पद्मावती मंत्र का जाप करें।

नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहनी,
सर्व कार्य करनी, मम विकट संकट हरणी,
मम मनोरथ पूरणी, मम चिंता चूरणी नमों।
पद्मावती नम स्वाहा-।

उपरोक्त पद्मावती मंत्र की एक माला दीपावली से लेकर प्रतिदिन प्रातः आंतरिक भाव से जपने से मनुष्य को रोजगार और धन की प्राप्ति होती है।

मंगल कलश
शांति का संदेशवाहक

धर्मशास्त्रों के अनुसार कलश में सम्पूर्ण देवता समाए हुए हैं। कलश को सुख-समृद्धि, वैभव और मंगल कामनाओं का प्रतीक माना गया है। कलश में भरा पवित्र जल इस बात का संकेत हैं कि हमारा मन भी जल की तरह हमेशा ही शीतल, स्वच्छ एवं निर्मल बना रहें। हमारा मन श्रद्धा, तरलता, संवेदना एवं सरलता से भरे रहें। यह क्रोध, लोभ, मोह-माया, ईष्या और घृणा आदि कुत्सित भावनाओं से हमेशा दूर रहें।

कलश पर लगाया जाने वाला स्वस्तिष्क का चिह्न चार युगों का प्रतीक है। यह हमारी 4 अवस्थाओं, जैसे बाल्य, युवा, प्रौढ़ और वृद्धावस्था का प्रतीक है।

पौराणिक शास्त्रों के अनुसार मानव शरीर की कल्पना भी मिट्टी के कलश से की जाती है। इस शरीररूपी कलश में प्राणिरूपी जल विद्यमान है। जिस प्रकार प्राणविहीन शरीर अशुभ माना जाता है, ठीक उसी प्रकार रिक्त कलश भी अशुभ माना जाता है।

इसी कारण कलश में दूध, पानी, पान के पत्ते, आम्रपत्र, केसर, अक्षत, कुंमकुम, दुर्वा-कुश, सुपारी, पुष्प, सूत, नारियल, अनाज आदि का उपयोग कर पूजा के लिए रखा जाता है। इसे शांति का संदेशवाहक माना जाता है।

शेयर बाजार उछाल के साथ बंद

मुंबई ।

मुम्बई शेयर बाजार शुक्रवार को बढ़त के साथ बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये बढ़त दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही एक्सिस बैंक, आईसीआईसीआई के साथ ही विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) के शेयरों में हुई भारी लिवाली (खरीददारी) से आयी है। इसी के साथ ही दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 104.25 अंक करीब 0.18 फीसदी बढ़कर 59,307.15 अंक पर बंद हुआ। वहीं दूसरी ओर पचास शेयर वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का (निफ्टी) भी 12.35 अंक तकरीबन 0.07 फीसदी ऊपर आकर 17,576.30 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के शेयरों में एक्सिस बैंक का शेयर सबसे अधिक 8.96 फीसदी ऊपर आया। बैंक का सितंबर तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 66.29 फीसदी बढ़कर 5,625.25 करोड़ रुपये रहा। इससे भी बाजार को बल मिल। इसके अलावा, आईसीआईसीआई बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, कोटक महिंद्रा बैंक, नेस्ले, टाइटन और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयर को भी लाभ हुआ। वहीं दूसरी ओर बजाज फाइनेंस, बजाज फिनसर्व, इंडसइंड बैंक और लार्सन एंड टुब्रो के शेयरों में गिरावट रही। वहीं गत दिवस भी सेंसेक्स ओर निफ्टी बढ़त के साथ ही बंद हुआ था। चार दिन पहले बीएसई पर सूचीबद्ध कंपनियों का मार्केट कैप 2,71,74,757.21 करोड़ रुपये था जो अब 4.79 लाख करोड़ रुपये बढ़कर 2,76,54,467 करोड़ रुपये पहुंच गया है। इसके साथ ही एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया के कॉस्पी, हांगकांग के हैंगसेंग और जापान के निक्की में गिरावट रही जबकि चीन के शंघाई कंपोजिट में लाभ हुआ। इसके अलावा यूरोप बाजारों की बात करें तो उसमें शुरूआती कारोबार में गिरावट रही। अमेरिकी शेयर बाजार भी गिरावट पर बंद हुआ। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट क्रूड 0.37 फीसदी नीचे आकर 92.02 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

रुपया चार पैसे की बढ़त के साथ बंद

मुंबई । अमेरिकी डॉलर के मुकाबले शुक्रवार को भारतीय रुपये में तेजी रही। इसी के साथ ही रुपया चार पैसे की बढ़त के साथ ही 82.75 प्रति डॉलर पर बंद हुआ। रुपये में ये उछाल कच्चे तेल में नरमी के साथ ही घरेलू शेयर बाजार में तेजी से आया है। अंतर-बैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 82.89 पर खुला और बाद में 82.59 के उच्च स्तर तथा 82.91 के निचले स्तर पर पहुंचने के बाद अंत में पिछले बंद भाव के मुकाबले चार पैसे मजबूत होकर 82.75 प्रति डॉलर पर बंद हुआ। इससे पहले गत दिवस भी रुपया बढ़त पर बंद हुआ था। यह अपने निचले स्तर से उबरकर 21 पैसे की तेजी के साथ 82.79 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। वहीं दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की मजबूती को आंकने वाला डॉलर सूचकांक 0.47 फीसदी बढ़कर 113.41 पर आ गया। वहीं अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट क्रूड वायदा 0.11 फीसदी नीचे आकर 92.28 डॉलर प्रति बैरल पर खिसक गया।

सरकार बढ़ा सकती है जीएसटी रिटर्न भरने की तारीख

नई दिल्ली। सरकार दिवाली से पहले सितंबर का जीएसटी रिटर्न भरने की अंतिम तिथि बढ़ा सकती है। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ने गुरुवार देर रात जारी एक बयान में कहा कि कारोबारियों को सितंबर का जीएसटी रिटर्न भरने के लिए और समय दिया जा सकता है। सीबीआईसी के मुताबिक कई करदाताओं ने जीएसटीएन पोर्टल के धीमा होने की शिकायत की थी और रिटर्न भरने की तिथि बढ़ाने का भी प्रस्ताव दिया था। फिलहाल इस प्रस्ताव की समीक्षा की जा रही है और उसके बाद अंतिम तिथि बढ़ाने की मंजूरी मिलेगी। हर महीने के लिए जीएसटीआर 3बी फॉर्म उसके अगले महीने की 20, 22 या 24 तारीख को भरा जाता है। यह समय सीमा हर राज्य के लिए अलग-अलग होती है। अक्टूबर में भी इन तिथियों पर सितंबर का जीएसटी रिटर्न दाखिल किया जाना था, लेकिन अब इसकी तारीख को आगे बढ़ाया जा सकता है। सीबीआईसी ने बताया कि गुरुवार को कुछ कारोबारियों के लिए जीएसटी रिटर्न भरने की अंतिम तिथि थी, लेकिन कई करदाताओं ने पोर्टल के काफी स्लो चलने की शिकायत की, जिससे वे मासिक जीएसटी रिटर्न फॉर्म जीएसटीआर 3बी नहीं भर सके।

बीएसएनएल अगले साल लांच कर सकती है 4जी सेवा

नई दिल्ली । जियो और एयरटेल की 5जी संवा लॉन्च हो चुकी है, जबकि बीएसएनएल अभी भी 3जी सेवाएं दे रहा है। टेलीकॉम कंपनी देश के कई हिस्सों में अपने 4जी नेटवर्क जांच रही है। जहां प्राइवेट टेलीकॉम कंपनियां 5जी लॉन्च कर चुकी हैं। वहीं बीएसएनएल की 4जी सेवा के लिए लोगों को अगले साल तक का इंतजार करना होगा। दूरसंचार मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि अगले साल जनवरी 2023 में बीएसएनएल 4जी देश भर में लॉन्च कर सकती है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, केंद्रीय मंत्री ने बताया कि बीएसएनएल 4जी लॉन्च की तैयारी कर रही है और अगले साल तक सब्सक्राइबर्स के लिए उपलब्ध होगी। अश्विनी वैष्णव ने बताया कि 4जी के कुछ दिनों बाद ही यूजर्स को 5जी सर्विस भी मिलेगी। साल 2023 की दूसरी छमाही में बीएसएनएल 5जी लॉन्च कर सकती है। 5जी की लॉन्चिंग के मौके पर अश्विनी वैष्णव ने कहा था कि बीएसएनएली 5जी भारत में 15 अगस्त 2023 तक लॉन्च हो सकता है।

इंडियन एनर्जी एक्सचेंज में बिजली कारोबार घटा

नई दिल्ली । बिजली खरीद-बिक्री बाजार इंडियन एनर्जी एक्सचेंज (आईईएक्स) में कारोबार जुलाई-सितंबर तिमाही में 11 प्रतिशत से अधिक घटकर 23.1 अरब यूनिट रहा। मुख्य रूप से आलोच्य तिमाही में आपूर्ति संबंधी अवरोधकों के कारण कारोबार घटा है। जुलाई-सितंबर 2021 में आईईएक्स का कुल कारोबार 26 अरब यूनिट था। कुल कारोबार में 19.7 अरब यूनिट परंपरागत बिजली बाजार और 1.5 अरब यूनिट हरित ऊर्जा खंड में हुआ। इसके अलावा नवीकरणीय ऊर्जा (आरईसी) बाजार में 19.14 लाख प्रमाणपत्रों का कारोबार हुआ। आईईएक्स ने बयान में कहा कि चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही के दौरान एक्सचेंज में बिजली मात्रा सालाना आधार पर 11 प्रतिशत घटकर 23.1 अरब यूनिट रही।

त्योहारी सीजन में मांग बढ़ने से भारतीय अर्थव्यवस्था में आई तेजी

- इस बार नवरात्र में वाहनों की बिक्री ने 2021 के मुकाबले 57 फीसदी की छलांग लगाई

नई दिल्ली ।

इस साल त्योहारी सीजन सीजन में मांग में बढ़ोतरी होने से भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी दर्ज की गई है। देश भर में दीवाली की रौनक है, बाजारों में चहल-पहल है। पिछले वर्षों में कोरोनोवायरस ने उत्सव और खपत को कम कर दिया। एक परामर्श फर्म के अनुमान के अनुसार ऑनलाइन मार्केटप्लेस अमेजन और वॉलमार्ट के स्वामित्व वाली फ्लिपकार्ट ने 22-30 सितंबर के बीच त्योहारी सीजन की पहली बिक्री के दौरान 27 फीसदी बढ़कर 5.7 बिलियन डॉलर हो गई। व्यापारियों का अनुमान है कि दुकानों पर करीब 2.5 लाख करोड़ रुपए (30.2 अरब डॉलर) खर्च होंगे। इस साल की दिवाली, रोशनी का त्योहार 24 अक्टूबर को आ रहा है। कोरोना संबंधित प्रतिबंधों के बिना महामारी शुरू होने के बाद से यह भारत का पहला उत्सव होगा। खरीदारों की वापसी अर्थव्यवस्था की रीढ़, खपत को बढ़ावा देने का काम करेगी। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के आंकड़ों से पता चलता है कि इस बार के नवरात्र में वाहनों की बिक्री ने 2021 के मुकाबले 57 फीसदी की छलांग लगाई है। भारत में टू-व्हीलर्स की बिक्री इस बार के नवरात्र में 52 फीसदी, थ्री-व्हीलर्स की बिक्री 115 फीसदी, कमर्शियल वाहनों की बिक्री 48 फीसदी, पैसेंजर व्हीकल्स यानी कार एसयूवी की बिक्री 70 फीसदी और ट्रैक्टरों की सेल्स में 58 फीसदीका इजाफा इस बार के नवरात्र में दर्ज किया गया। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि इस बार के नवरात्र में वाहनों की बिक्री कोरोना से पहले यानी 2019 के शारदीय नवरात्र से भी 16 फीसदी ज्यादा रही है।

त्योहारी सीजन में नहीं सताएगी प्याज और दालों की महंगाई, दिसंबर तक नहीं बढ़ेंगी कीमतें

(एजेंसी)

केंद्र सरकार ने कहा कि त्योहारी सीजन में लोगों को प्याज और दालों की महंगाई नहीं सताएगी। पर्याप्त बफर स्टॉक होने की वजह से प्याज और दालों की कीमतें दिसंबर तक नहीं बढ़ेंगी। उपभोक्ता मामलों के सचिव रोहित कुमार सिंह ने कहा कि सरकार के पास 2022-23 के लिए 2.5 लाख टन से ज्यादा प्याज का भंडार है। इसमें 54 लाख टन प्याज राज्यों को जारी किया गया है। दालों के मामले में उन्होंने कहा कि देश में उड़द, मूंग और मसूर का बफर स्टॉक 43 लाख टन से अधिक है। विभिन्न राज्यों की मांग को देखते हुए 20-27 लाख टन दालों का आयात किया गया है। इसके अलावा, मध्याह्न भोजन और अन्य कल्याणकारी योजना के लिए केंद्र ने बाजार कीमत से 8 रुपए कम दाम पर राज्यों को करीब 88,000 टन चना दाल की आपूर्ति की है। सचिव ने कहा कि प्याज की अखिल भारतीय औसत खुदरा कीमत पिछले साल के मुकाबले 28 फीसदी घटी है।

बेमौसम बारिश का मामूली असर

सचिव ने कहा कि बेमौसम बारिश का खरीफ प्याज उत्पादन पर मामूली असर हुआ हो सकता है लेकिन बफर स्टॉक होने के कारण हम इस कमी को दूर करेंगे। उन्होंने कहा, स्थानीय इलाकों में कीमतों के आधार पर बफर स्टॉक से प्याज बाजार में उतारा जा रहा है। राष्ट्रीय बफर स्टॉक से अब तक 14 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को लगभग 54,000 टन प्याज जारी किया गया है।

सरकार ने राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों, मदर डेयरी, सफल, एनसीसीएफ और केंद्रीय भंडार को केंद्रीय बफर स्टॉक से 800 रुपए प्रति क्विंटल की दर से प्याज उठाने की पेशकश की है। टमाटर और आलू जल्द खराब होने वाले सामान हैं। इसलिए इनकी कीमतों में उतार-चढ़ाव हो सकता है लेकिन सरकार इनकी कीमतों पर लगातार नजर रखे हुए है।

एक्सिस बैंक का स्टॉक 8 फीसदी चढ़ा, स्टॉक ऑल टाइम हाई पर पहुंचा

दिल्ली।

तिमाही नतीजों में जबरदस्त मुनाफा कमाने के बाद अब **Axis Bank** का स्टॉक ऑल टाइम हाई पर पहुंच गया है। सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन **Axis Bank** के शेयर ने 895.70 रुपये के स्तर को छु लिया। यह बैंक के शेयर का ऑल टाइम हाई है। वहीं, एक दिन पहले के मुकाबले यह शेयर 8 फीसदी से ज्यादा चढ़ चुका है। बैंक का मार्केट कैपिटल भी 2 लाख 74 हजार करोड़ रुपये के पार है।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट:

शेयर बाजार के जानकारों के मुताबिक एक्सिस बैंक के शेयर के अपट्रेंड में बने रहने की उम्मीद है। अधिकांश बैंक कोविड की चुनौतियों से बाहर निकल गए हैं और अब एक्सिस बैंक बेहतर मार्जिन हासिल करने में कामयाब है। बढ़ती ब्याज दरों के कारण, बैंक के शुद्ध ब्याज आय (एनआईआई) और शुद्ध ब्याज मार्जिन (एनआईएम) में भी सुधार हुआ है। **GCL Securities** के रवि सिंघल की मानें तो अगले साल दिवाली तक एक्सिस बैंक का शेयर भाव 1170 रुपये तक जा सकता है। रवि सिंघल ने कहा कि कोई भी निवेशक दिवाली 2023 के लिए स्टॉक खरीद और रख सकता है। वहीं, चॉइस ब्रोकिंग के कार्यकारी निदेशक सुमीत बगड़िया के मुताबिक बैंक के स्टॉक ने 865 रुपये के स्तर पर ब्रेकआउट दिया है। यह स्टॉक आगे बढ़ता है तो हम 920 रुपये तक जाने की उम्मीद कर सकते हैं।

बैंक के नतीज:

बता दें कि चालू वित्त वर्ष की सितंबर तिमाही में एक्सिस बैंक का शुद्ध लाभ 70 प्रतिशत उछलकर 5,329.77 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। फंसे हुए ऋण में कमी के साथ आय में मजबूत वृद्धि से बैंक का लाभ बढ़ा है। वहीं, आय सितंबर तिमाही में बढ़कर 24,180 करोड़ रुपये हो गई।

विमानन कंपनी इंडिगो आठ नई उड़ानें शुरू करेगी

नई दिल्ली । विमानन कंपनी इंडिगो ने भोपाल-उदयपुर, अहमदाबाद-जम्मू, रांची-भुवनेश्वर और इंदौर-चंडीगढ़ मार्ग पर आठ नई उड़ानें शुरू करने की घोषणा की। कंपनी के मुताबिक इन नई उड़ानों में से भोपाल-उदयपुर मार्ग पर संचालित होने वाली उड़ानें, आरसीएस (क्षेत्रीय उड़ान योजना के तहत संचालित उड़ान) उड़ानें होंगी, जिनसे संबंधित राज्यों के बीच संपर्क सेवा में सुधार होगा। इंडिगो के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि विमानन कंपनी के लिए सात राज्यों के बीच नए घरेलू मार्गों पर विशेष उड़ानें शुरू करके संपर्क और पहुंच बढ़ाना खुशी की बात है। इंडिगो के बेड़े में 275 से अधिक विमान हैं और कंपनी रोजाना औसतन 1,600 उड़ानों का संचालन करती है। उसकी उड़ानें 74 घरेलू और 26 अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर उपलब्ध हैं।

जेम्स एंड ज्वैलरी कंपनी अपने इनवेस्टर्स को देगी बड़ा तोहफा

दिल्ली।

जेम्स एंड ज्वैलरी बिजनेस से जुड़ी एक कंपनी अपने निवेशकों को बड़ा तोहफा देने जा रही है। यह कंपनी पुनीत कमर्शियल्स लिमिटेड है। ज्वैलरी कंपनी इनवेस्टर्स को 5:1 के रेशियो में बोनस शेयर देने जा रही है। यानी, कंपनी हर 1 शेयर पर 5 बोनस शेयर दे रही है। कंपनी ने बोनस शेयर की रिकॉर्ड डेट 9 नवंबर 2022 फिक्स कर दी है। कंपनी के शेयर 8 नवंबर 2022 को एक्स-बोनस पर ट्रेड करेंगे।

1 महीने में 150% चढ़ गए कंपनी के शेयर

पुनीत कमर्शियल लिमिटेड के शेयरों में पिछले एक महीने में अच्छी तेजी आई है। ज्वैलरी कंपनी के शेयर 5 सितंबर 2022 को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) पर 20.60 रुपये के स्तर पर थे। कंपनी के शेयर 3 अक्टूबर 2022 को बीएसई में 51.25 रुपये के स्तर पर ट्रेड कर रहे थे। कंपनी के शेयरों ने पिछले एक महीने में करीब 150 पर्सेंट का रिटर्न दिया है। अगर किसी व्यक्ति ने एक महीने पहले कंपनी के शेयरों में 1 लाख रुपये लगाए होते और अपने निवेश को बनाए रखा होता तो मौजूदा समय में यह पैसा 2.48 लाख रुपये होता।

20 दिन में ही शेयरों में 40% से ज्यादा की तेजी:

पुनीत कमर्शियल के शेयरों में पिछले 20 दिन में 40.2 पर्सेंट की तेजी आई है। कंपनी के शेयर 21 सितंबर 2022 को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) पर 36.55 रुपये के स्तर पर थे। पुनीत कमर्शियल के शेयर 10 अक्टूबर 2022 को बीएसई में 51.25 रुपये के स्तर पर रहे हैं। कंपनी का मार्केट कैप 1.23 करोड़ रुपये का है। पुनीत कमर्शियल्स में प्रमोटर की हिस्सेदारी 73.74 पर्सेंट है। वहीं, कंपनी में पब्लिक की शेयरहोल्डिंग 26.26 पर्सेंट है।

डिस्क्लेमर: यहां सिर्फ शेयर के परफॉर्मेंस की जानकारी दी गई है, यह निवेश की सलाह नहीं है। शेयर बाजार में निवेश जोखिमों के अधीन है और निवेश से पहले अपने एडवाइजर से परामर्श कर लें।

यूजर्स को दुर्व्यवहार से बचाने के लिए इंस्टाग्राम ने पेश किया नया फीचर

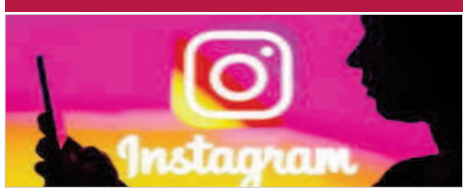

(एजेंसी)

इंस्टाग्राम ने हिडन वर्ड्स के अपडेट के साथ-साथ यूजर्स को दुर्व्यवहार से बचाने के लिए नए फीचर शुरू किए हैं। अब अगर आप किसी को ब्लॉक करते हैं, तो आपके पास अतिरिक्त खातों को ब्लॉक करने का विकल्प होगा, जिससे उनके लिए फिर से आपसे जुड़ना मुश्किल हो सकता है, कंपनी ने एक ब्लॉगपोस्ट में कहा।इस नए बदलाव के लिए पहले परीक्षणों के निष्कर्षों के आधार पर, कंपनी को उम्मीद है कि हर हफ्ते चार मिलियन कम खातों को अवरुद्ध करने की आवश्यकता होगी क्योंकि ये खाते अब स्वचालित रूप से अवरुद्ध हो जाएंगे। पिछले साल लॉन्च होने के बाद से, कम से कम 10,000 अनुयायियों वाले पांच में से एक से अधिक लोगों ने हिडन वर्ड्स फीचर को चालू कर दिया है।संदेश अनुरोधों और टिप्पणियों से हानिकारक सामग्री को स्वचालित रूप से हटाने के लिए छिपे हुए शब्द एक प्रभावी उपकरण है।कंपनी के मुताबिक औसतन 40 फीसदी कम कमेंट आपत्तिजनक हो सकते हैं। कंपनी क्रिएटर खातों के लिए हिडन वर्ड्स को स्वचालित रूप से चालू करने का परीक्षण शुरू कर रही है।प्रत्येक उपयोगकर्ता किसी भी समय सेटिंग्स को चालू या बंद करने में सक्षम होगा और अतिरिक्त शब्दों, वाक्यांशों और इमोजी के साथ एक अनुकूलित सूची बना सकता है जिसे वे छिपाना चाहते हैं।

अब, एक नई अधिसूचना उपयोगकर्ताओं को रुकने और यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करेगी कि आपत्तिजनक टिप्पणी का जवाब देने से पहले वे कैसे प्रतिक्रिया देना चाहते हैं। कंपनी ने कहा कि एप्लिकेशन किसी निर्माता को संदेश अनुरोध भेजते समय लोगों को सीधे चैट में सम्मानजनक होने की याद दिलाता है।

स्टील की कीमत 40 प्रतिशत गिरकर 57,000 रुपये प्रति टन पर आई

बिज़नेस न्यूज़।

घरेलू बाजार में पिछले छह महीने के दौरान स्टील की कीमतें करीब 40 फीसद गिरकर 57,000 रुपये प्रति टन पर आ गई। इससे रियल एस्टेट, बुनियादी ढांचा तथा निर्माण, वाहन और उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों में कमी देखने को मिल सकती है। लौह और स्टील उद्योग से जुड़ी मूल्य समेत अन्य जानकारी देने वाली कंपनी स्टीलमिंट ने कहा कि 15 फीसदी निर्यात शुल्क लगाने की वजह से निर्यात में नरमी से कीमतों में यह गिरावट आई है। इस साल की शुरुआत में हॉट रोल्ड कॉइल (एचआरसी) की कीमतों में बढ़ोतरी दिखना शुरू हो गई थी।

जीएसटी समेत 93,000 रुपये प्रति टन हो गई थी कीमत:

एचआरसी की बढ़ती कीमतें उपयोगकर्ता उद्योगों के लिए चिंता का विषय था, क्योंकि स्टीलमिंट के अनुसार, घरेलू बाजार में स्टील की कीमतें अप्रैल, 2022 में 78,800 रुपये प्रति टन पर पहुंच गई थी। वहीं 18 फीसद जीएसटी के बाद कीमत लगभग 93,000 रुपये प्रति टन हो गई थी।

स्टील की कीमतों में 40 फीसदी गिरावट असामान्य नहीं:

श्याम स्टील के निदेशक ललित बेरीवाला ने कहा कि स्टील की कीमतों में 40 फीसदी गिरावट असामान्य नहीं है, क्योंकि इसके दाम 50 फीसदी तक बढ़ गए थे। उन्होंने कहा कि दाम घटने से रियल एस्टेट, वाहन, इन्फा समेत टिकाऊ उपभोक्ता उत्पादों पर पड़ना तय है जिसका अंतिम लाभ उपभोक्ताओं को मिलेगा। साथ ही रोजगार के भी अवसर बढ़ सकते हैं।

सीसीआई ने गूगल पर लगाया 1,337 करोड़ का जुर्माना

नई दिल्ली।

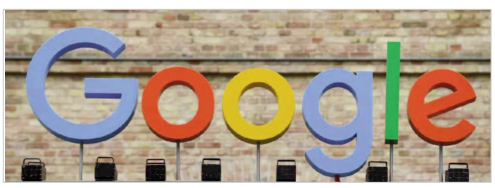

भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) ने अमेरीकी कम्पनी गूगल पर 1,337.76 करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया है। भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग ने एंड्रॉयड मोबाइल उपकरण परिवेश में बाजार में मजबूत स्थिति के दुरुपयोग को लेकर गूगल पर यह जुर्माना लगा है। इसके अलावा, सीसीआई ने प्रमुख इंटरनेट कंपनी को अनुचित कारोबारी गतिविधियों को रोकने और बंद करने का निर्देश दिया है। आयोग ने कहा कि गूगल को एक निर्धारित समय-सीमा के भीतर अपने कामकाज के तरीके को संशोधित करने का निर्देश भी दिया गया है।

सीसीआई ने अप्रैल 2019 में देश में एंड्रॉयड आधारित स्मार्टफोन के उपभोक्ताओं की शिकायतों के बाद मामले की विस्तृत जांच का आदेश दिया था। एंड्रॉयड दरअसल स्मार्टफोन और टैबलेट के मूल उपकरण निर्माताओं (ओईएम) द्वारा स्थापित एक ओपन-सोर्स, मोबाइल ऑपरेटिंग प्रणाली है। अनुचित व्यावसायिक प्रथाओं के आरोप मोबाइल एप्लिकेशन डिस्ट्रीब्यूशन एग्रीमेंट (एमएडीए) और एंटी फ्रैगमेंटेशन एग्रीमेंट (एएफए) जैसे दो समझौतों से संबंधित हैं। नियामक ने कहा कि अनुचित कारोबारी गतिविधियों को रोकने का आदेश जारी करने के अलावा एंड्रॉयड मोबाइल उपकरण पारिस्थितिकी तंत्र में कई बाजारों में अपनी प्रमुख स्थिति का दुरुपयोग करने को लेकर गूगल पर जुर्माना लगाया गया है।

जर्मनी की कोच क्रोम्प कोविड-19 की चपेट में, फीफा अंडर-17 महिला विश्व कप में पहला मामला

मुंबई । फीफा अंडर-17 महिला विश्व कप के दौरान जर्मनी की मुख्य कोच फ्रेडरिक क्रोम्प शुक्रवार को कोरोना वायरस जांच में पॉजिटिव पाई गई। इस विश्व कप में यह कोरोना वायरस संक्रमण का पहला मामला है। डीवाई पाटिल स्टेडियम में खिताब की दावेदार ब्राजील के खिलाफ जर्मनी के क्वार्टर फाइनल मुकाबले से कुछ घंटे पहले जांच में क्रोम्प के संक्रमण की पुष्टि हुई। वह क्वार्टर फाइनल मैच के दौरान टीम के डग-आउट में नहीं बैठेंगी और उनकी जगह मेलानी बेहरिंगर मुख्य कोच, जबकि जूलिया सिमिक सहायक कोच की भूमिका निभाएंगी। क्रोम्प ने स्थानीय आयोजन समिति की ओर से जारी विज्ञप्ति में कहा, 'हमने नई स्थिति को जल्द ही स्वीकार कर लिया। मुझे टीम की खिलाड़ियों पर पूरा भरोसा है। मैं अपनी ओर से मेलानी बेहरिंगर और दूसरे कोच तथा खिलाड़ियों का पूरा समर्थन करुंगी।

अंकुश को रजत, विकास और नितेश ने जीता कांस्य; भारत का ग्रीको रोमन में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

पोंटेवेदरा (स्पेन) ।

भारतीय पहलवान अंकुश को अंडर-23 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में महिलाओं के 50 किलो भार वर्ग में रजत पदक से संतोष करना पड़ा जबकि विकास (72 किग्रा) और नितेश (97 किग्रा) ने कांस्य पदक जीते जिससे भारत इस प्रतियोगिता की ग्रीको रोमन शैली में तीन पदकों के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सफल रहा। अंकुश के सामने फाइनल में कड़ी चुनौती थी क्योंकि उनका सामना जापान की युई सुसाकी से था जो कि मौजूदा ओलंपिक और विश्व चैंपियन है। जापानी पहलवान ने अपनी ख्याति के अनुरूप प्रदर्शन करके दो मिनट से भी कम समय में भारतीय खिलाड़ी को हराकर स्वर्ण पदक जीता। युई सुसाकी ने इस जीत से इतिहास भी रचा और वह कुश्ती का ग्रैंडस्लैम पूरा करने वाली पहली पहलवान बन गई हैं। उनके नाम पर ओलंपिक खेलों का स्वर्ण पदक तथा चार विश्व खिताब दर्ज हैं। उन्होंने अंडर-17, अंडर-20, अंडर-23 और सीनियर चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीते हैं। विकास और नितेश ने बुधवार की रात को ग्रीको रोमन में भारत के पदकों की संख्या तीन पर पहुंचाई। इससे एक दिन पहले साजन भानवाला ने 77 किग्रा में कांस्य पदक जीता था जो कि इस चैंपियनशिप में ग्रीको रोमन में भारत का पहला पदक भी था। विकास ने कांस्य पदक के मुकाबले में जापान के दाइगो कोबायाशी को 6-0 से हराया, जबकि नितेश ने ब्राजील के इगोर फर्नांडो अल्वेस डी क्विरोज को तकनीकी श्रेष्ठता से पराजित किया। यह परिणाम इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि ग्रीको रोमन के 10 पहलवानों में से केवल छह को ही वीजा मिल पाया था। स्पेन के दूतावास ने ग्रीको रोमन के चार पहलवानों सहित 21 भारतीय पहलवानों को वीजा नहीं दिया था।

टी20 विश्व कप : जिम्बाब्वे पहली बार सुपर-12 में, स्कॉटलैंड को 5 विकेट से हराया

होबार्ट ।

जिम्बाब्वे ने कसी हुई गेंदबाजी के बाद क्रेग इर्विन (58) के अर्द्धशतक और सिकंदर रजा के 40 रनों की बदौलत स्कॉटलैंड को आईसीसी टी20 विश्व कप 2022 में शुक्रवार को पांच विकेट से हराकर पहली बार टूर्नामेंट के दूसरे चरण में जगह बनाई। जिम्बाब्वे इस जीत के साथ ग्रुप-बी की तालिका में शीर्ष स्थान हासिल करके टी20 विश्व कप के सुपर-12 चरण में पहुंच गई, जबकि टूर्नामेंट में स्कॉटलैंड का सफर समाप्त हो गया है। स्कॉटलैंड ने पहले दौर के अंतिम मैच में टॉस जीतकर बल्लेबाजी करते हुए जॉर्ज मन्सी (54) के अर्द्धशतक के दम पर ज़िम्बाब्वे को 133 रन का लक्ष्य दिया। जिम्बाब्वे ने इर्विन-रजा की अर्द्धशतकीय साझेदारी से यह लक्ष्य नौ गेंदें रहते हुए हासिल कर लिया। लक्ष्य का पीछा करते हुए ज़िम्बाब्वे के तीन विकेट 42 रन पर गिरने के बाद इर्विन और रज़ा ने टीम को संभाला। इर्विन ने 54 गेंदों पर छह चौकों के साथ 58 रन की संयम भरी पारी खेली। रजा ने विस्फोटक रुख अपनाते हुए 23 गेंदों पर तीन चौके और दो छक्के जड़कर 40 रन बनाए। टीम का स्कोर 119 रन होने तक दोनों बल्लेबाज पवेलियन लौट गए, जिसके बाद मिल्टन शुंबा और रायन बर्ल ने टीम को लक्ष्य तक पहुंचाया।

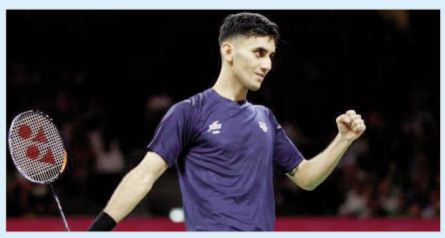

डेनमार्क ओपनः लक्ष्य सेन हमवतन एच एस प्रणय को सीधे सेटों में हराकर क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

ओडेन्से । राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता लक्ष्य सेन ने हमवतन एच एस प्रणय को सीधे गेम में हराकर डेनमार्क ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट में पुरूष एकल क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया। विश्व चैम्पियनशिप 2021 के कांस्य पदक विजेता सेन ने दुनिया के 13वें नंबर के खिलाड़ी प्रणय को 21.9, 21.18 से हराया। अब उनका सामना जापान के कोडाइ नाराओका से होगा। इस मैच से पहले प्रणय और सेन का एक दूसरे के खिलाफ जीत हार का रिकॉर्ड 2.2 का था लेकिन सेन ने इस मैच की शुरूआत से ही प्रणय को दबाव में ला दिया। दुनिया के आठवें नंबर के खिलाड़ी सेन ने 5.1 से बढ़त बना ली जो जल्दी ही 11.3 की हो गई। पहला गेम सेन ने आसानी से जीता। दूसरे गेम में प्रणय ने वापसी की कोशिश की लेकिन ब्रेक के बाद सेन ने उनकी हर कोशिश को नाकाम करते हुए जीत दर्ज की।

टी20 विश्वकप : आयरलैंड ने दो बार की विजेता वेस्टइंडीज को 9 विकेट से हराकर सुपर-12 में प्रवेश किया

होबार्ट ।

आयरलैंड ने दो बार 2 बार की टी-20 विश्व कप विजेता वेस्टइंडीज टीम को ग्रुप बी के अंतिम मैच में 9 विकेट से हराकर सुपर-12 में जगह बनायी है। वहीं इसी के साथ ही वेस्टइंडीज टीम विश्वकप से बाहर हो गयी है। वेस्टइंडीज टीम तीसरी बार यहां खिताब जीतने पहुंची थी पर उसे नई टीम आयरलैंड के हाथों करारी हार झेलनी पड़ी है। इस मैच में पहले बल्लेबाज करते हुए वेस्टइंडीजन ने ब्रैंडन किंग के 52 रनों की सहायता से निर्धारित 20 ओवरों में पांच विकेट पर 146 रन बनाये। इसके साथ ही आयरलैंड को जीत के लिए 147 रनों का लक्ष्य मिला जो उसने केवल एक विकेट के नुकसान पर 150 रन बनाकर आसानी से हासिल कर लिया। आयरैंड की ओर से पॉल स्टार्लिंग ने नाबाद 66 और लॉरकन टकर ने 46 रन बनाये। आउट होने वाले एकमात्र बल्लेबाज एंड्रयू बालबिर्नी 37 रहे। इससे पहले बल्लेबाजी करते हुए वेस्टइंडीज की शुरुआत अच्छी नहीं रही। उसने तीसरे ओवर में ही सलामी बल्लेबाज मेयर्स का विकेट खो दिया। इसके बाद 5वें ओवर में चार्ल्स केवल 24 रन बनाकर पेवेलियन लौट गये। आयरलैंड की गेंदबाजी इतनी कसी हुई थी कि इंडीज बल्लेबाजी बिखर गयी क्योंकि उसके लिए रन बनाना कठिन हो गया था। ऐसे में बड़े शॉट खेलने के प्रयास में वेस्टइंडीज के खिलाड़ी आउट होते गये। इविन लुइस ने 13 रन बनाये जबक कसान निकोलस पूरन भी इतने ही रन बनाकर पवेलियन लौट गये। इसके बाद रॉमन पॉवेल 6 रन

पर डेलानी की गेंद पर आउट हुए। अंत में ब्रेंडन किंग और ओडियन स्मिथ ने कुछ अच्छे शॉट्स खेलकर पारी को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। किंग ने 48 गेंदों में 6 चौके और एक छक्का लगाकर नाबाद 62 रन जबकि स्मिथ ने 12 गेंदों में नाबाद 19 रन बनाये। आयरलेंड की ओर से डेलानी ने सबसे अधिक 3 विकेट लिए। इसके बाद जीत के इरादे से उतरी आयरलैंड ने तूफानी शुरुआत की। स्टार्लिंग और कसान बालबिर्नी ने केवल 7.3 ओवरों में ही 73 रन बना दिया। बालबिर्नी के आउट होने के बाद भी रनों की रफ्तार नहीं रुकी। स्टार्लिंग और टकर ने तेजी से रन बनाने का सिलसिला जारी रखा और अपनी टीम को लक्ष्य तक पहुंचा दिया।

टी20 वर्ल्ड कप के लिए भारतीय टीम को शुभकामनाएं देते हुए सुरेश रैना ने लिखा खास नोट

(एजेंसी)

टी20 वर्ल्ड कप को लेकर भारतीय क्रिकेट टीम जमकर तैयारी कर रही है। नेट्स में अभ्यास करना हो या जिम में वर्कआउट करना, टीम कहीं भी कोई कसर नहीं छोड़ती है। भारतीय समर्थक भी चाहते हैं कि भारत इस बार वर्ल्ड कप जीत जाए। इसी कड़ी में भारतीय दिग्गज सुरेश रैना ने भी टीम को बधाई दी है. इसका वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है. दरअसल, सुरेश रैना ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में उन्हें भारतीय क्रिकेट टीम के लिए संदेश लिखते देखा जा सकता है। संदेश को कागज पर लिखने के बाद वह कैमरे को भी दिखाता है। इसमें रैना ने भारतीय क्रिकेट टीम को शुभकामनाएं लिखी हैं। कैमरे को कागज दिखाने के बाद उन्होंने सिग्नेचर स्टाइल में अपनी जांघ पर वार किया, फिर एक हाथ हवा में उठाया. इसके साथ ही उन्होंने अपने पोस्ट किए गए वीडियो में एक खास कैप्शन भी लिखा। उन्होंने लिखा,

'आगामी टी20 विश्व कप 2022 के लिए भारतीय क्रिकेट टीम को शुभकामनाएं। पूरा देश आपके साथ है, लड़कों, अपना 100त्न दें और कप घर ले आएं।' उनके इस वीडियो पर फैन्स तरह-तरह के रिएक्शन दे रहे हैं. उनके फैनस का कहना है कि वो इस वर्ल्ड कप में रैना को काफी मिस करेंगे। रैना दो साल पहले अंतराष्ट्रीय क्रिकेट से रिटायर हो गए। वहीं इस मौके पर फैन्स ने धोनी को भी बहुत याद किया। उनका कहना है कि यह वर्ल्ड कप धोनी और रैना के बिना काफी अधूरा लगेगा। आपको बता दें, भारत अपने विश्व कप अभियान की शुरुआत पाकिस्तान के खिलाफ 23 अक्टूबर को करेगा। यह मुकाबला मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर खेला जाएगा। हाल ही में रैना ने इस मैच को लेकर बयान दिया था कि अगर हम पाकिस्तान के खिलाफ पहला मैच जीत गए तो वर्ल्ड कप जीत जाएंगे।

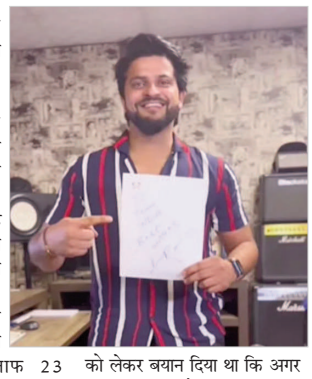

लेवांडोवस्की के दो गोल, बार्सीलोना ने विलारीयाल को हराया

मैड्रिड । रीयाल मैड्रिड के हाथों रविवार को 'क्लासिको' हारने के बाद बार्सीलोना ने विलारीयाल को 3 . 0 से हराकर स्पेनिश लीग फुटबॉल में जीत की राह पर वापसी की। बार्सीलोना ने पहले हाफ में सात मिनट के भीतर तीन गोल करके यह जीत दर्ज की। रॉबर्ट लेवांडोवस्की ने 31वें और 35वें मिनट में गोल किये जबकि अंसु फाटी ने 38वें मिनट में गोल दागा। अब बार्सीलोना के मैड्रिड से तीन ही अंक कम है। वहीं मैड्रिड ने आखिरी स्थान पर काबिज एल्शे को 3 . 0 से हराया । विलारीयाल इस हार के बाद नौवें स्थान पर है । अन्य मैचों में अलमेरिया ने गिरोना को 3 . 2 से मात दी । वहीं सातवें स्थान पर काबिज ओसासुना ने एस्पियानोल को 1 . 0 से हराया ।

एमचैस रैपिड शतरंज फ़ाइनल - डूडा नें बनाई बढ़त, खिताब के करीब

नई दिल्ली (निकलेश जैन) वैंपियन चैस टूर के आठवे पड़ाव एमचैस रैपिड शतरंज के बेस्ट ऑफ 2 फाइनल मुक़ाबले के पहले दिन पोलैंड के यान डूडा नें अपने शानदार प्रदर्शन को बरकरार रखते हुए अजरबैजान के शाखरियार ममेद्यारोव को 3-1 से पराजित कर 1-0 की बढ़त बना ली है और अगर दूसरे दिन उन्होने 2 अंक भी अर्जित किए तो वह एमचैस रैपिड 2022 के विजेता बन जाएँगे जबकि अगर ममेद्यारोव को खिताब जीतना है तो पहले उन्हे दूसरे दिन कम से कम 2.5 अंक बनाने होंगे और फिर टाईब्रेक मे बजाई जीतनी होगी । फाइनल के पहले दिन चार रैपिड मुक़ाबले खेले गए जिसकी शुरुआत पहली बाजी ड्रॉ रहने से हुई ,दूसरे मुक़ाबले में डूडा नें रेटी ओपनिंग में 40 चालों में जीत दर्ज कर 1.5-0.5 से बढ़त बना ली तीसरा मुक़ाबला एक बार फिर अनिर्णीत रहा और स्कोर डूडा के पक्ष में 2-1 हो गया । अंतिम रैपिड में सफ़ेद मोहरो से एक बार फिर डूडा ने खुद को बेहतर साबित किया और क्वीन पान ओपनिंग में 35 चालों में खेल जीत कर पहला दिन 3-1 से अपने नाम कर लिया ।

संक्षिप्त समाचार

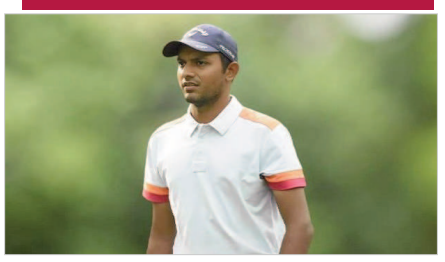

वीर अहलात ने पुणे ओपन गोल्फ में एक शॉट की बनाई बढ़त

पुणे । वीर अहलावत ने पुणे ओपन गोल्फ चैम्पियनशिप के तीसरे दौर में पांच अंडर 61 का स्कोर बनाकर एक शॉट की बढ़त के साथ तालिका में शीर्ष पर पहुंच गये। इस पीजीटीआई टूर्नामेंट के तीसरे दौर में वह डबल बोगी करने के बाद तालिका में शीर्ष पहुंचने में सफल रही। दूसरे दौर के बाद शीर्ष पर रहे दिल्ली के कपिल कुमार ने यहां के पूना गोल्फ कोर्स में तीन अंडर 63 का स्कोर किया और दूसरे स्थान पर पहुंच गये। चंडीगढ़ के अजितेश संधू श्रीलंका के एन थंगराजा के साथ कुल 13-अंडर 185 के स्कोर के साथ संयुक्त तीसरे स्थान पर चल रहे है। नोएडा के राशिद खान ने दिन का सर्वश्रेष्ठ स्कोर नौ अंडर 57 बनाया। उन्होंने इस प्रदर्शन के बाद 32 पायदान की छलांग लगाते हुए दिल्ली के क्षितिज नवीद कौल के साथ संयुक्त रूप से पांचवें स्थान पर पहुंच गये।

IPL: पंजाब किंग्स के साथ असिस्टेंट कोच के तौर पर जुड़ा यह ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज

नई दिल्ली। पूर्व आस्ट्रेलियाई विकेटकीपर बल्लेबाज ब्रैड हैडिन 2023 इंडियन प्रीमियर लीग से पहले पंजाब किंग्स से सहायक कोच के तौर पर जुड़ गये हैं। पंजाब की फ्रेंचाइजी ने महान भारतीय अनिल कुंबले की जगह विश्व कप विजेता कोच ट्रेवर बेलिस को नया मुख्य कोच नियुक्त करने के बाद 44 वर्षीय हैडिन को टीम से जोड़ा। हैडिन और बेलिस दोनों सनराइजर्स हैदराबाद में भी साथ ही थे। हैडिन आस्ट्रेलिया के लिये 66 टेस्ट, 126 वनडे और 34 टी20 मैच खेल चुके हैं। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) सूत्र ने गुरूवार को पीटीआई से कहा,''हैडिन को सहायक कोच नियुक्त किया गया है। जल्द ही बाकी सहयोगी स्टाफ की भी नियुक्ति की जायेगी। कुंबले के अलावा टीम ने सहायक कोच जोंटी रोड्स और गेंदबाजी कोच डेमियन राइट का अनुबंध भी नहीं बढ़ाया था। रोड्स 2020 चरण से पहले पंजाब की टीम से जुड़े थे जबकि राइट इसके एक साल बाद आये थे। टीम पिछले तीन सत्र में प्लेऑफ में भी जगह नहीं बना सकी है, तो प्रबंधन ने कुंबले का अनुबंध नहीं बढ़ाने के अलावा सहयोगी स्टाफ के सदस्यों से भी अलग होने का फैसला किया। पंजाब की टीम बेलिस के मार्गदर्शन में पहला आईपीएल खिताब जीतने की उम्मीद लगाये हैं जिन्होंने कोलकाता नाइट राइडर्स को अपनी कोचिंग में 2012 और 2014 में दो खिताब दिलाये थे।

जोहोर कप : भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम का पहला मुकाबला आज मेजबान मलेशिया से होगा

कुआलालंपुर ।

भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम शनिवार को जोहोर कप हॉकी टूर्नामेंट में मेजबान मलेशियाई टीम के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी। कोरोना महामारी के कारण तीन साल बाद आयोजित किये जा रहे इस टूर्नामेंट को लेकर टीम उत्साहित है और कप्तान उत्तम सिंह को उम्मीद है कि इस बार टीम जीत के लिए कोई कसर नहीं रखेगी। भारतीय टीम को मलेशिया से होने वाले मुकाबले के बाद रविवार को दक्षिण अफ्रीका, 25 अक्टूबर को जापान, 26 अक्टूबर को ऑस्ट्रेलिया और 28 अक्टूबर को गत चैम्पियन ब्रिटेन से खेलना है। इसके बाद शीर्ष दो टीमें 29 अक्टूबर को होने वाले फाइनल में पहुंचेंगी। भारतीय टीम को पिछली बार खिताबी मुकाबले में ब्रिटेन के हाथों 1-2 से हारने के कारण रजत पदक ही मिल पाया था। इस बार टीम वह गलती नहीं करना चाहती है। कप्तान ने कहा कि अभ्यास शिविर में टीम ने आपस में कई बातों पर चर्चा की है और उसे भरोसा है कि टीम खिताब जीतने में सक्षम है। उत्तम ने कहा, ''हमारी टीम टूर्नामेंट में हिस्सा ले रही शीर्ष टीमों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने को लेकर उत्साहित है। हमारे लिए अपनी टीम को आंकने का यह अच्छा अवसर है इससे टीम एक इकाई के तौर पर मजबूत होकर उभरेगी।'' गौरतलब है कि भारत ने साल 2013 और 2014 में इस टूर्नामेंट का खिताब जीता है जबकि चार बार टीम उप विजेता रही है। उत्तम ने कहा, ''हम किसी भी टीम को हल्के में नहीं लेंगे और मैच के हालातों के अनुसार ही खेलेंगे। साथ ही कहा कि हमें आक्रमण और रक्षण के लिए तैयार रहना होगा।''

मिचेल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले मैच में नहीं खेलेंगे : विलियमसन

सिडनी । न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम के कप्तान केन विलियमसन ने कहा है कि ऑलराउंडर डेरिल मिचेल आईसीसी टी20 विश्व कप 2022 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शनिवार को होने वाले पहले मैच में नहीं खेलेंगे। विलियमसन के अनुसार मिचेल अभी तक अपनी उंगली के फ्रैक्चर से नहीं उबरे हैं। इससे पहले मिचेल न्यूजीलैंड, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच खेली गई टी20 ट्राई सीरीज से भी बाहर हो गए थे। यह ऑलराउंडर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हुए अभ्यास मैच में शामिल था पर वह बल्लेबाजी और गेंदबाजी नहीं कर पाया। कीवी कप्तान ने कहा कि टीम के अन्य खिलाड़ी फिट हैं और मुकाबले के लिए तैयार हैं। विलियमसन ने मैच से पहले हुई पत्रकार वार्ता में कहा, मिचेल अभी भी अनुपलब्ध है हालांकि बाकी सभी खिलाड़ी फिट हैं। पिछले साल टी20 विश्व कप में न्यूजीलैंड को फाइनल मुकाबले में ऑस्ट्रेलियाई टीम के हाथों हार का सामना करना पड़ा था। विलियमसन ने कहा कि टूर्नामेंट का पहला गेम दोनो ही टीमें जीतना चाहेंगी हालांकि यह इतना आसान नहीं है। अगस्त 2009 के बाद से ही न्यूजीलैंड ने ऑस्ट्रेलिया में किसी भी प्रारूप में एक भी मैच नहीं जीता है। कीवी टीम देश में तीनों टी20 मैच हारी है पर कीवी कप्तान पिछले मैचों को लेकर ज्यादा परेशान नहीं हैं। उन्होंने कहा, नहीं, हमने इसके बारे में ज्यादा नहीं सोचा है। उनमें से बहुत से संघर्ष ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ रहे हैं और वह एक मजबूत टीम है। **न्यूजीलैंड की अंतिम ग्यारः** डेवोन कॉन्वे (विकेटकीपर), फिन एलन, केन विलियमसन (कप्तान), ग्लेन फिलिप्स, मिचेल ब्रेसवेल, जेम्स नीशम, मिचेल सैंटनर, ट्रेंट बोल्ड, टिम साउदी, लॉकी फर्ग्युसन, ईश सोढ़ी।

मुख्यमंत्री ने साइंस सिटी से 3,338 करोड़ रुपए के कुल 16,359 विकास कार्यों का ई-लोकार्पण तथा ई-शिलान्यास किया

अहमदाबाद । मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने शुक्रवार को अहमदाबाद में साइंस सिटी में आयोजित 'विश्वास से विकास यात्रा' के दूसरे चरण के राज्यव्यापी शुभारंभ समारोह में कहा कि गुजरात आज देश में विकास की दृष्टि से अग्रसर राज्य सिद्ध हुआ है। आज विकास यानी गुजरात और गुजरात यानी विकास की पहचान स्थापित हुई है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विकास की सुदृढ़ नींव डाली है। विकास की इस सुदृढ़ नींव के चलते गुजरात आज देश में विशिष्ट ऊँचाई प्राप्त कर पाया है। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने साइंस सिटी, अहमदाबाद से शुक्रवार को 3,338 करोड़ रुपए के 16,359 विकास कार्यों का ई-लोकार्पण तथा ई-शिलान्यास किया। इस कार्यक्रम में राज्य के सभी जि़ले वर्चुअली शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने गुजरात के विकास में अग्रसर होने का उल्लेख करते हुए कहा कि पिछले 20 वर्षों से गुजरात की विकास यात्रा अनुपम रही है। इसके मूल में जनता द्वारा श्री नरेन्द्र मोदी पर किया गया अपार विश्वास है। मोदी के नेतृत्व में गुजरात विकास की नई दिशाएँ प्राप्त कर पाया और हम उसी पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने राज्य में विकास कार्यों के चलते स्थापित हुई जनसुविधाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि शहरों के जैसी सुविधाएँ गाँवों में उपलब्ध कराना राज्य सरकार का दृष्टिकोण रहा है। इसके परिणामोन्मुखी क्रियान्वयन के चलते आज शहरों जैसी सुविधाएँ गाँवों तक विस्तृत हुई हैं। भूपेंद्र पटेल ने कहा कि हाल में डिफ़ेंस एक्सपो प्रदर्शनी आयोजित हुई है। गुजरात भी रक्षा क्षेत्र में देश के साथ क़दम से क़दम मिला रहा है, जो हमारे लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में 5जी टेक्नोलॉजी लॉन्च की है। गुजरात भी अत्याधुनिक से अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी के उपयोग के साथ आगे बढ़ रहा है। इतना ही नहीं, विकास कार्य एवं जनसुविधाएँ स्थापित होने से राज्य में लोककल्याण के कार्यों में भी अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी का सुनियोजित उपयोग हो रहा है। इसके फलस्वरूप आज आर्मी टैंक का उत्पादन दहेज में हो रहा है। अब वे दिन दूर नहीं हैं, जब राजकोट में एयरोप्लेन के पार्ट्स बनेंगे।

उन्होंने कहा कि हाल ही में देश के सबसे बड़े शिक्षा अभियान मिशन स्कूल ऑफ़ एक्सीलेंस की लॉन्चिंग गुजरात से प्रधानमंत्री द्वारा की गई है। मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य सुविधाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रत्येक तहसील मुख्यालय पर निर्मित डायलिसिस सेंटर तथा जि़ला मुख्यालय पर निर्मित डे केयर कीमोथेरापी सेंटर कार्यरत हैं, जिनके माध्यम से राज्य का नागरिक किसी भी कोने में डायलिसिस आदि उपचार प्राप्त कर सकेगा। उन्होंने कहा कि महिला, बाल, दलित, वंचित, आदिवासी, छात्र तथा किसान सहित सभी वर्गों तक विकास के फल पहुँचाने के लिए सरकार कार्यरत है। राज्य में 36 लाख महिलाओं को गैस कनेक्शन मिले हैं। इसके अलावा सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से 14 लाख बेटियों को 5.55 करोड़ रुपए की सहायता दी गई है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने वाले स्टार्टअप क्षेत्र में भी गुजरात पिछले 3 वर्षों से देशभर में प्रथम है। सबसे बड़ा ऐतिहासिक बजट देने के साथ गुजरात नीति आयोग के मानदंडानुसार वित्तीय प्रबंधन में भी प्रथम क्रम पर है। राज्य में ऐसी सभी व्यवस्थाएँ की गई हैं कि कोविड महामारी के बाद भी विकास की गति न रुके। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि गुजरात में विकास के साथ विरासतों के संवर्द्धन को भी गुजरात सरकार द्वारा प्रधानता दी गई है। अंबाजी, सोमनाथ, पावागढ एवं द्वारका आदि यात्राधामों की संपूर्ण कायापलट हो चुकी है।

मुख्य सचिव पंकज कुमार ने कहा कि पिछले 20 वर्षों में जनता को केन्द्र में रखकर राज्य सरकार ने विकास कार्य किए हैं। लोगों के विकास और उत्थान के लिए सुशासन की नीति पर ज़ोर दिया गया है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में गुजरात विकास की नई दिशाएं उकेर रहा है। कुमार ने कहा कि एक माह पूर्व 'विश्वास से विकास यात्रा' की शुरुआत हुई थी। आज दूसरे चरण में 2600 करोड़ रुपए से भी अधिक की लागत वाले 16,000 से अधिक विकास कार्यों को शामिल कर लिया गया है। गुजरात तीव्र गति विकास की दिशा में बढ़ रहा है। राज्य के महत्वपूर्ण विभागों के कार्यों के क्रियान्वयन द्वारा जनसुविधा के कार्य शुरू किए जाने वाले हैं। उन्होंने आगे कहा कि राज्य के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात विकास की अद्वितीय गति प्राप्त कर रहा है।

गुजरात में अगले पांच दिन बारीश ना होने की भविष्यवाणी के बीच डांग में मूशलाधार बारिश

अहमदाबाद ।

मौसम विभाग ने दिवाली त्यौहारों के दौरान आगामी 5 दिनों तक बारिश होने की संभावना से इंकार किया है। मौसम विभाग के मुताबिक केवल दक्षिण गुजरात में आसमान बादलों से घिरा रहेगा। मौसम विभाग के भविष्यवाणी के बीच आज दोपहर दक्षिण गुजरात के डांग में मूशलाधार बारिश ने पानी पानी कर दिया। गुलाबी ठंड के बीच मूशलाधार बारिश होने से व्यापारी और किसानों की चिंता बढ़ गई है। मूशलाधार बारिश होने से डांग जिले के आहवा में रोडवेज के बस डिपो के निकट पानी भर गया है, जिससे राहगिरों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। बेमौसमी बारिश होने से नागली और धान की फसल को लेकर किसानों में चिंता है। दूसरी ओर राज्य के अन्य हिस्सों में दोहरी ऋतु का अनुभव हो रहा है। वहीं राज्य के ज्यादातर हिस्सों में ठंड धीरे धीरे अपना असर दिखाने लगी है। सुबह और शाम के वक्त हवा चलने से गुलाबी ठंड का अहसास हो रहा है। अहमदाबाद में दिन के दौरान कड़ी धूप और रात को गुलाबी ठंड का अहसास होता है। मौसम विभाग के मुताबिक अहमदाबाद अधिकतम

तापमान 3। डिग्री और न्यूनतम तापमान 22 डिग्री के आसपास रहेगा। जबकि उत्तरी गुजरात के अरवल्ली में अधिकतम तापमान 35 डिग्री और न्यूनतम तापमान 21 डिग्री, बनासकांठा में अधिकतम 36 डिग्री और न्यूनतम 22 डिग्री तापमान रहेगा। दक्षिण गुजरात के भरुच में अधिकतम तापमान 36 डिग्री और न्यूनतम तापमान 23 डिग्री के आसपास रहेगा। मध्य गुजरात के दाहोद में अधिकतम 33 डिग्री और न्यूनतम तापमान 19 डिग्री के चलते शाम से ठंड का अनुभव होगा। सौराष्ट्र के बोटाद में अधिकतम तापमान 38 डिग्री और न्यूनतम 22 डिग्री तथा भावनगर में अधिकतम 35 और न्यूनतम तापमान 25 डिग्री के आसपास रहेगा।

अहमदाबाद से अमृतसर और तिरुच्चिरापल्ली के बीच चलेगी साप्ताहिक फेस्टीवल स्पेशन ट्रेन

अहमदाबाद । पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अहमदाबाद से अमृतसर और तिरुच्चिरापली के बीच साप्ताहिक फेस्टिवल स्पेशल ट्रेनों की कुल 16 ट्रिप विशेष किराये पर चलाने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार है-

- ट्रेन संख्या 09425/09426 अहमदाबाद-अमृतसर-अहमदाबाद स्पेशल (06 ट्रिप)

ट्रेन संख्या 09425 अहमदाबाद-अमृतसर स्पेशल 24 अक्टूबर से 07 नवंबर 2022 तक प्रति सोमवार को अहमदाबाद से 21:05 बजे चलकर तीसरे दिन 00:20 बजे अमृतसर पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09426 अमृतसर-अहमदाबाद स्पेशल 26 अक्टूबर से 09 नवंबर 2022 तक प्रति बुधवार अमृतसर से 02:45 बजे चलकर अगले दिन 08:45 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी। मार्ग में दोनों दिशाओं मेन यह ट्रेन छायापुरी, गोधरा, रतलाम, नागदा, कोटा, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, भरतपुर, मथुरा, दिल्ली सफदरजंग, अंबाला कैंट एवं चंडीगढ़ स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में फर्स्ट एसी, सेकंड एसी, थर्ड एसी, स्लीपर क्लास एवं जनरल श्रेणी के कोच रहेंगे।

- ट्रेन संख्या 09419/09420 अहमदाबाद-तिरुच्चिरापल्ली-अहमदाबाद स्पेशल कुल 10 ट्रिप

ट्रेन संख्या 09419 अहमदाबाद-तिरुच्चिरापली स्पेशल 27 अक्टूबर से 24 नवंबर 2022 तक प्रति गुरुवार को अहमदाबाद से 09:30 बजे चलकर तीसरे दिन 03:45 बजे तिरुच्चिरापली पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09420 तिरुच्चिरापली-अहमदाबाद स्पेशल 30 अक्टूबर से 27 नवंबर 2022 तक प्रति रविवार को तिरुच्चिरापली से 05:45 बजे चलकर अगले दिन 21:15 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी। मार्ग में यह ट्रेन वडोदरा, सूरत, वापी, वसई रोड, कल्याण, पुणे, सोलापुर, कलबुरगि, वाडी, रायचूर, मंत्रालयम, गुंटाकल, ताड़ीपत्री, कडपा, रेणिगुंटा, अराकोणम, पेरंबूर, चेन्नई एगमोर, ताम्बरम, चेंगलपट्ट, विल्लुप्पुरम, कड़लुर पोर्ट, चिदंबरम, शीरकषि, वैद्दीस्वरन कोइल, मईलाडुतुरै, कुंभकोणम, पापनाशम,एवं तंजावूर स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में फर्स्ट एसी, सेकंड एसी, थर्ड एसी, स्लीपर क्लास एवं जनरल श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन संख्या, 09425एवं 09419 की बुकिंग 22 अक्टूबर, 2022 से पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

स्टडी ग्रुप के यूके पार्टनर का द गार्डियन यूनिवर्सिटी गाइड 2023 के शीर्ष रैंकिंग में स्थान दिया गया

अहमदाबाद। छात्रों के लिए वैश्विक शिक्षा के भारत के अग्रणी प्रदाता स्टडी ग्रुप के यूके विश्वविद्यालय भागीदारों को पिछले महीने जारी द गार्डियन यूनिवर्सिटी 2023 में स्थान मिला और उसमें भी टॉप 20 में से 7 स्थान प्राप्त हुए। इससे पहले स्टडी ग्रुप पार्टनर ने द टाइम्स और द संडे टाइम्स गुड यूनिवर्सिटी गाइड में उत्तम क्रम हासिल किए थे। स्टडी ग्रुप के डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म के दो प्रतिष्ठित पार्टनर यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड और इंपिरियल कॉलेज लंदन के रैंकिंग में क्रमश: दूसरे और पांचवें स्थान पर है इसके बाद दुरहाम विश्वविद्यालय छठे स्थान पर है। यूनिवर्सिटी ऑफ अबेरदि पिछली 2022 की रैंकिंग से 7 स्थानों पर बढ़कर 13 स्थान पर आ गया है।

2022 में यूनिवर्सिटी ऑफ सर 57 वे स्थान पर थी जबकि इस बार 24वें स्थान पर है। इसके अलावा लानकेस्टर यूनिवर्सिटी-14, यूनिवर्सिटी ऑफ स्ट्रेथक्लाइड-16, यूनिवर्सिटी ऑफ लंडन टॉप के बीस कर्मो में स्थान हासिल किया। स्टडी ग्रुप के बाकी के टॉप 50 में आने वाले यूनिवर्सिटी पार्टनर में यूनिवर्सिटी ऑफ शेफील्ड (30), रॉयल हॉललोवे यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन (33) और कार्डिफ़ यूनिवर्सिटी (35) स्थान पर है।

इस अवसर पर स्टडी ग्रुप के रीजनल डायरेक्टर श्रीमान करण ललित ने बताया कि विद्यार्थियों ने हर स्तर पर उत्कृष्ट अनुभव प्रदान प्रदान करने के लिए दिए जाने वाले प्रतिष्ठित सम्मान द गार्डियन यूनिवर्सिटी गाइड 2023 में उत्तम रैंकिंग प्राप्त करने वाली हमारी यूके पार्टनर्स यूनिवर्सिट को बधाई देता हूं।

Amazon.in पर 'धनतेरस स्टोर' के साथ घर लाएं सौभाग्य

बेंगलुरू। सोना और गहने की खरीदारी के लिए साल के सबसे शुभ समय से ठीक पहले, Amazon.in ने आज अपने 'धनतेरस स्टोर 'की घोषणा की है। इस धनतेरस स्टोर पर सोने और चांदी के सिक्कों, फेस्टिव ज्वैलरी, पूजा की वस्तुएं, किराने का सामान और घरेलू जरूरत की वस्तुएं, होम डेकोर, इलेक्ट्रॉनिक्स, लार्ज अप्लायंसेस, स्मार्टफोन, एक्सेसरीज, डिजिटल गोल्ड से लेकर खास तौर पर क्यूरेट किए गए प्रोडक्ट का विशाल कलेक्शन पेश किया गया है।

ग्राहकMMTC, सेन्को, मालाबार गोल्ड एंड डायमंड्स, मिआ बाय तनिष्क, जीवा, जोया लुकास, पीसी चंद्रा, केंडेर बाय कल्याण ज्वेलर्स, मेलोरा, हर्शीज़, रेडमी, एप्पल, सैमसंग, इलेक्ट्रोलक्स जैसे अग्रणी ब्रांडों में से अपने लिए खास प्रोडक्ट चुन सकते हैं।

'धनतेरसस्टोर' शानदार कीमत और सुविधा जनक रूप से हजारों उभरते छोटे और मध्यम कारोबारियों की ओर से उत्पादों का सबसे बड़ा संग्रह प्रस्तुत करेगा। छोटे भारतीय व्यवसायों की ओर से घर के लिए फेस्टिव डेकोर उत्पादों से लेकर खूबसूरत एथनिक वियर तक, ग्राहक भारत भर के विक्रेताओं द्वारा पेश किए जा रहे त्योहार के सबसे बेहतरीन संग्रह में से खरीदारी कर सकते हैं।

ग्राहक अपने अमेजन शॉपिंग ऐप (केवल एंड्रॉइड पर उपलब्ध) पर धनतेरस स्टोर तक पहुंचने के लिए एलेक्सा के साथ वॉयस नेविगेशन का उपयोग कर सकते हैं। यूजर्स ऐप पर एलेक्सा आइकन टैप कर स्टोर पर जाने के लिए कह सकते हैं "एलेक्सा, मुझे धनतेरस स्टोर पर ले जाओ।"

अमेजन ग्रेट इंडियन फेस्टिवल के साथ मनायें 'हैप्पीनेस अपग्रेड डेज़'

अमेजन इंडिया का 23 सितंबर को शुरू हुआ महीने भर चलने वाले फेस्टिव सेलिब्रेशन, अमेज़न ग्रेट इंडियन फेस्टिवल (AGIF) जारी है। इस जश्न के बीच, Amazon.in ने आज 'हैप्पीनेस अपग्रेड डेज़' पावर्ड बाय इंटेल EVO की घोषणा की है। 'हैप्पीनेस अपग्रेड डेज़' 4 अक्टूबर, 2022 से शुरू होकर 8 अक्टूबर तक चलेगा। यहां ग्राहकों को सभी कैटेगरी के उत्पादों पर एक्स्ट्रा सेविंग करने का मौका मिलेगा। द ग्रेट इंडियन फेस्टिवल 'हैप्पीनेस अपग्रेड डेज' स्मार्टफोन, लॉर्ज अप्लायंसेस और लैपटॉप, टीवी, होम एवं किचन प्रोडक्ट, कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स, फैशन एंड ब्यूटी, रोजमर्रा की जरूरत की वस्तुआ के विशाल कलेक्शन पर सेलर्स और ब्रांडों की ओर से पेश की गई खास डील्स और ऑफ़र को पेश किया गया है। यहां ग्राहकों को इंटेल EVO, iQOO, माइक्रोसॉफ्ट, मैमीपोको, फेरेरो, शाओमी, P&G, कोलगेट और गोदरेज सहित अन्य उत्पादों की के विशाल कलेक्शन पर खास ऑफ़र प्राप्त होंगे।

अमेजन पे के साथ त्योहारों की खरीदारी को बनाएं और अधिक फायदेमंद: AGIF के दौरान खरीदारी करने वाले ग्राहक EMI ट्रांजेक्शन के साथ सिटीबैंक, आरबीएल, वनकार्ड और रुपे क्रेडिट और डेबिट कार्ड पर 10% तत्काल छूट के साथ और भी अधिक बचत कर सकते हैं। ग्राहक प्रमुख क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, बजाज फिनसर्व और अमेजन पे लेटर पर उपलब्ध नो-कॉस्ट EMI का भी लाभ उठा सकते हैं। ग्राहक डिजिटल गोल्ड की खरीद पर 1000 रुपये तक और गिफ्ट कार्ड की खरीद पर 10% तक कैशबैक जैसे खास ऑफर्स का भी मजा उठा सकते हैं।

अहमदाबाद के थ्री इडियट्स ने चाय की चुस्की पे बनाया वूब मेमो एप जो पूरी दुनिया को जोड़ेगा

जहां एक दशक पहले 'इन्फ्लुएंसर्स मार्केटिंग' शब्द नहीं सुना जाता था, वहीं अब यह भारत और दुनिया भर में सबसे तेजी से बढ़ते उद्योगों में से एक बन गया है। वर्तमान में, वैश्विक इन्फ्लुएंसर्स मार्केटिंग उद्योग, 2020 में 6 बिलियन अमरीकी डालर का, 32 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़कर 2025 तक 24.1 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुंचने की उम्मीद है। भारतीय इन्फ्लुएंसर्स मार्केटिंग उद्योग भी गति बनाए हुए है। रु. 900 करोड़, 2025 तक यह रु। 2,200 करोड़ 25 प्रतिशत सीएजीआर से बढ़ने की उम्मीद है। ङ्कक्क स्थ्वरू ऐप के बारे में लोगों को सूचित करने के लिए गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब के 300 से अधिक गांवों को ऐप के बारे में सूचित किया गया।

लॉन्च के बारे में बोलते हुए, वूबमेमो ऐप के संस्थापक शिवाय ने कहा, "इस दिन और उम्र में जब पूरी दुनिया सोशल मीडिया पर है और एक शोध के अनुसार भारत में 448 मिलियन से अधिक सक्रिय सोशल मीडिया उपयोगकर्ता हैं जो औसतन 2 घंटे बिताते हैं और सोशल मीडिया पर 25 मिनट, हम कुछ ऐसा विकसित करना चाहते थे। हमने भारत के विभिन्न गांवों, शहरों में रहने वाले अज्ञात लोगों में प्रतिभा को बाहर लाने के उद्देश्य से VUUB MEMO की शुरुआत की है, जबकि यह हमारा है, हमारे देश का है।"

ऐप के आइडिया के बारे में बात करते हुए शिवाय ने कहा कि हम तीन दोस्त एक दिन चाय पी रहे थे और अलग-अलग ऐप पर चर्चा करते हुए हमने सोचा कि हम कुछ ऐसा नहीं बना सकते जिससे न केवल देश को आर्थिक रूप से बल्कि देश के लोगों को भी फायदा हो। शिवाय, शैलेश और डिंपलकुमार हम थ्री इडियट्स ने इस ऐप को प्रतिभा रखने वालों को एक मंच प्रदान करने के विचार से बनाया है। इस ऐप के माध्यम से दुनिया भर के इन्फ्लुएंसर्स लोगों को एक मंच मिलेगा और भारत और विदेशों से पैसा भारत में रहेगा।"

"वूब मेमो ऐप उपयोगकर्ताओं को लघु वीडियो में अपनी यादें बनाने और पोस्ट करने और इन यादों को विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा करने की अनुमति देता है। ऐप को 25 सितंबर को दुनिया भर में लॉन्च किया गया है और हमें यकीन है कि भारत के गांवों और शहरों में लोग हमारे देश के आदमी द्वारा बनाए गए ऐप का समर्थन करेंगे और हमसे जुड़ेंगे।" शिवाय ने कहा। वूब मेमो ऐप में कंपनी इस बात का पूरा ख्याल रखेगी कि ऐप में यूजर्स द्वारा पोस्ट किया गया वीडियो समाज को नुकसान न पहुंचाए। समाज को नुकसान पहुंचाने वाली कोई भी गैर-सामग्री ऐप से हटा दी जाएगी।

एमवेइंडिया 'हैल्दी वाली दिवाली' मनाता है – अच्छे स्वास्थ्य के महत्व को प्रोत्साहित करता है – घर के अंदर, बाहर और हर तरफ

मुंबई ।

सर्वांगीण स्वास्थ्य अपनाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने और स्वास्थ्य व स्वच्छता को घर के अंदर, बाहर तथा चारों ओर प्राथमिकता देने के अपने प्रयास के अनुरूप एमवे इंडिया, जो अग्रणी एफएमसीजी डायरेक्ट सेलिंग कंपनियों में से एक है, ने अपने डायरेक्ट सेलिंग पार्टनर्सऔर उनके ग्राहकों के लिए पूरे क्षेत्र में स्वस्थ रहने व खाना पकाने, सौंदर्य व घरेलू स्वच्छता पर सत्र आयोजित करके उत्सव की खुशी बढ़ाने के लिए'हेल्दी वाली दिवाली' प्रस्तुत की है।इसके अलावा, राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य में विशिष्ट विशेषज्ञ वक्ता के कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

हाल ही में उत्कट्-इच्छा वाले समुदायों का उदय एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति रही है क्योंकि लोग विशेष क्षणों और अवसरों का जश्न मनाने के लिए एकट्ठे होते हैं।जैसे-जैसे लोग उत्सव के लिए तैयार हो रहे हैं, एमवे उत्सव को यादगार बनाने और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देते हुए स्वास्थ्य, प्रसन्नता और घरेलू स्वच्छता के महत्व पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। पश्चिमीक्षेत्र, में कंपनी ने अपने 'हैल्दी वाली दिवाली' अभियान के तहत स्वास्थ्य के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से स्वस्थ खाना पकाने, आयुर्वेद, त्वचा की देखभाल और घरेलू स्वच्छता पर कई मध्यवर्ती कार्यक्रमों के आयोजन की शुरुआत की।

उपक्रमों पर टिप्पणी करते हुए, चन्द्र भूषण चक्रबर्ती, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, पूर्व व पश्चिम, एमवे इंडिया ने कहा है, "हर साल बढते हुए जोशऔर उत्सवों के बड़े और चमक-दमक होते जाने के साथ, एमवे इंडिया में हमने उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और समग्र कल्याण को प्राथमिकता देना जारी रखा है। इस प्रवृत्ति के अनुरूप और लोगों को बेहतर, स्वस्थ जीवन जीने में सहायकबने रहने की अपनी प्रतिबद्धता को शक्ति देते हुए, हम स्वस्थ जीवन, सौंदर्य और घरेलू स्वच्छता पर ज्ञान साझा करने व आदान-प्रदान के लिए उत्कट्-इच्छा रखने समुदायों को एक साथ ला रहे हैं।हमारे 'ह्नेल्दी वाली दिवाली' अभियान के अंतर्गत आयोजित सत्र स्वास्थ्य पर केंद्रित थे ङ्क घर के अंदर, बाहर और चारों ओर,जिसमें विशेषज्ञ वक्ताओं ने हमारे डायरेक्ट सेलिंग पार्टनर्स के साथ आसान और स्वस्थ व्यंजनों, आयुर्वेद का महत्व, सौंदर्य, त्वचा की देखभाल और घरेलू स्वच्छता की युक्तियों को साझा किया।त्योहारों से ठीक पहले की जाने वालीये अनूठी पहल लोगों को स्वयं का और अपने प्रियजनों काकल्याण सुनिश्चित करने में आकर्षक उत्पाद अनुभवों के माध्यम से अपने उत्सव समारोहों के संवर्धन में मदद करेगी।"

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादकः संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोनः 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)